FOR REFERNCE ONLY.

लोक सभा वाद-विवाद

(हिन्दी संस्करण)

पहला सत्र
(चौदहवीं लोक सभा)

Gazettes & Debates Unit
Parliament Library Building
Room No. FB-025
Block 'G'
Acc. No.....57.....
Dated.....3/2/05.....

(खण्ड 1 में अंक 1 से 7 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली
मूल्य : पचास रुपये

सम्पादक मण्डल

गुरदीप चन्द मलहोत्रा
महासचिव
लोक सभा

आनन्द बी. कुलकर्णी
संयुक्त सचिव

शारदा प्रसाद
प्रधान मुख्य सम्पादक

नत्थू सिंह
मुख्य सम्पादक

वन्दना त्रिवेदी
वरिष्ठ सम्पादक

पीयूष चन्द्र दत्त
सम्पादक

विजय कुमार कौशिक
सहायक सम्पादक

नारद प्रसाद किमोठी
सहायक सम्पादक

(अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जाएगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जाएगा।

सम्पादक मण्डल

गुरदीप चन्द मलहोत्रा
महासचिव
लोक सभा

आनन्द बी. कुलकर्णी
संयुक्त सचिव

शारदा प्रसाद
प्रधान मुख्य सम्पादक

नत्थू सिंह
मुख्य सम्पादक

वन्दना त्रिवेदी
वरिष्ठ सम्पादक

पीयूष चन्द्र दत्त
सम्पादक

विजय कुमार कौशिक
सहायक सम्पादक

नारद प्रसाद किमोठी
सहायक सम्पादक

(अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जाएगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जाएगा।

विषय-सूची

चतुर्दश माला, खंड 1, पहला सत्र, 2004/1926 (शक)

अंक 3, शुक्रवार, 4 जून, 2004/ 14 ज्येष्ठ, 1926 (शक)

विषय	कॉलम
सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण	1
अध्यक्ष का निर्वाचन	2-26
अध्यक्ष महोदय को बधाई	6-40
डा. मनमोहन सिंह	6-8
श्री प्रणब मुखर्जी	8-9
श्री लाल कृष्ण आडवाणी	9-10
श्रीमती सोनिया गांधी	11-12
श्री अटल बिहारी वाजपेयी	12
श्री बसुदेव आचार्य	13-14
प्रो. राम गोपाल यादव	14-15
श्री लालू प्रसाद	15-16
कुमारी मायावती	16-17
श्री सी. कुप्पुसामी	17-18
श्री चन्द्रकांत खैरे	18-19
श्री बृज किशोर त्रिपाठी	19-20
श्री पी. के. वासुदेवन नायर	20-21
श्री शरद पवार	21-22
श्री नीतीश कुमार	22-23
श्री सुखदेव सिंह ढींडसा	23
प्रो. एम. रामदास	24-25
श्री के. चन्द्रशेखर राव	25
डा. एम. जगन्नाथ	25-26
श्री रामविलास पासवान	26-28
श्री पी. ए. संगमा	28

विषय	कॉलम
श्री बीर सिह महतो	28-29
श्री जोवाकिम बखला	29-30
डा. अरूण कुमार शर्मा	30
सुश्री महबूबा मुफ्ती	31-32
श्री रामदास बंडु आठवले	32-33
श्री चन्द्रशेखर	33-34
श्री एच. डी. देवेगौडा	35-36
श्री शिबु सोरेन	36-37
श्री असादुद्दीन ओवेसी	37
श्री पी. सी. थामस	37-38
श्री के. फ्रांसिस जार्ज	38-39
श्री सानछुमा खुंगुर बैसीमुथियारी	39-40
अध्यक्ष महोदय द्वारा सदस्यों को धन्यवाद	40-46
प्रधानमंत्री, सदन के नेता और विपक्ष के नेता का परिचय	46
मंत्रियों का परिचय	52-56

लोक सभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष*
श्री सोमनाथ चटर्जी

उपाध्यक्ष**
श्री चरणजीत सिंह अटवाल

सभापति तालिका***
श्री बालासाहिब विखे पाटील
श्री गिरिधर गमांग
श्री मानवेन्द्र शाह

महासचिव
श्री गुरदीप चन्द मलहोत्रा

---

*4.6.2004 को निर्वाचित

* 9.6.2004 को निर्वाचित

*** राष्ट्रपति द्वारा 29.5.2004 को नामनिर्देशित

भारत के राष्ट्रपति द्वारा 29 मई, 2004 को निम्नलिखित तीन पृथक आदेश जारी किए गए :

"1. जबकि 2 जून, 2004 को लोक सभा की पहली बैठक के आरंभ होने से तुरन्त पहले अध्यक्ष का पद रिक्त हो जाएगा और उपाध्यक्ष का पद भी रिक्त है;

अतः, भारत के संविधान के अनुच्छेद 95 के खंड (1) द्वारा मुझे प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, मैं एतद्द्वारा लोक सभा के सदस्य, श्री सोमनाथ चटर्जी को उक्त बैठक अर्थात् 2 जून, 2004 की बैठक के आरंभ होने से लेकर 4 जून, 2004 को लोक सभा की बैठक शुरू होने तक के लिए अध्यक्ष के पद के कर्त्तव्यों का निर्वहन करने के लिए नियुक्त करता हूं।

ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
भारत का राष्ट्रपति।"

2. और जबकि सामयिक अध्यक्ष के रूप में श्री सोमनाथ चटर्जी की नियुक्ति 4 जून, 2004 को लोक सभा की बैठक आरंभ होने तक ही है;

अतः, भारत के संविधान के अनुच्छेद 95 के खंड (1) द्वारा मुझे प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए मैं एतद्द्वारा लोक सभा के सदस्य, श्री बालासाहिब विखे पाटील को 4 जून, 2004 को लोक सभा की बैठक के आरम्भ होने से लेकर उक्त सभा द्वारा अध्यक्ष के चुने जाने तक के लिए अध्यक्ष पद के कर्त्तव्यों का निर्वहन करने के लिए नियुक्त करता हूं।

ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
भारत का राष्ट्रपति।"

3. मैं एतद्द्वारा सर्वश्री सोमनाथ चटर्जी, बालासाहिब विखे पाटील, गिरिधर गमांग और मानवेन्द्र शाह को ऐसे व्यक्तियों के रूप में नियुक्त करता हूं जिनमें से किसी के भी समक्ष लोक सभा के सदस्य भारत के संविधान के अनुच्छेद 99 के उपबंधों के अनुसार शपथ ले सकते हैं या प्रतिज्ञान कर सकते हैं।

ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
भारत का राष्ट्रपति।"

लोक सभा वाद-विवाद

लोक सभा

शुक्रवार, 4 जून, 2004/14 ज्येष्ठ, 1926 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न ग्यारह बजे समवेत हुई।

(सामयिक अध्यक्ष महोदय (श्री बालासाहिब विखे पाटील) पीठासीन हुए)

[अनुवाद]

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण

अध्यक्ष महोदय : महासचिव अब कृपया उन सदस्यों के नाम पुकारें जिन्होंने अभी तक शपथ ग्रहण नहीं की है अथवा प्रतिज्ञान नहीं किया है।

सुश्री महबूबा मुफ्ती (अनंतनाग)

श्री सी. कुप्पुसामी (मद्रास उत्तर)

श्री ए. कृष्णास्वामी (श्रीपेरुम्बुदूर)

श्री ए. के. मूर्ति (चेंगलपट्टू)

श्री के. एम. कादर मोहिदीन (वेल्लौर)

श्री डी. वेणुगोपाल (तिरूपत्तूर)

श्री ई. जी. सुगावनम (कृष्णागिरि)

श्री के. सी. पलनिसामी (करूर)

श्री ए. के. एस. विजयन (नागापट्टिनम)

श्रीमती एम.एम.के. भवानी राजेन्तीरन (रामनाथपुरम)

श्रीमती वी. राधिका सेलवी (तिरूचेन्यूर)

श्री कीर्ति वर्धन सिंह उर्फ राजा भइया (गोंडा)

श्री देवेन्द्र सिंह यादव (एटा)

श्री तरित बरण तोपदार (बैरकपुर)

कुमारी ममता बैनर्जी (कलकत्ता दक्षिण)

पूर्वाह्न 11.17 बजे

[अनुवाद]

अध्यक्ष का निर्वाचन

अध्यक्ष महोदय : अब हम लोक सभा के अध्यक्ष के निर्वाचन के लिए प्रस्ताव लेंगे। मैं, श्रीमती सोनियां गांधी से आग्रह करता हूं कि वह अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करें।

श्रीमती सोनिया गांधी (रायबरेली) : महोदय, आपकी अनुमति से मैं प्रस्ताव करती हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

रक्षा मंत्री (श्री प्रणब मुखर्जी) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

[हिन्दी]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी (गांधीनगर) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

कृषि मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री (श्री शरद पवार) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

[हिन्दी]

ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती सूर्यकांता पाटील) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करती हूं।

रेल मंत्री (श्री लालू प्रसाद) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री राम कृपाल यादव (पटना) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

प्रो. राम गोपाल यादव (संभल) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

[हिन्दी]

श्री मोहन सिंह (देवरिया) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

रसायन और उर्वरक मंत्री तथा इस्पात मंत्री (श्री रामविलास पासवान) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री रामचन्द्र पासवान (रोसेड़ा) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

कोयला और खान मंत्री (श्री शिबु सोरेन) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं।

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री हेमलाल मुर्मू (राजमहल) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

कुमारी मायावती (अकबरपुर) : अध्यक्ष महोदय मैं प्रस्ताव करती हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री भालचन्द्र यादव (खलीलाबाद) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

निर्विभाग मंत्री (श्री के. चन्द्रशेखर राव) : मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री मधुसूदन रेड्डी (आदिलाबाद) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समथन करता हूं।

[हिन्दी]

श्री नीतीश कुमार (नालंदा) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

श्री अजित सिंह (बागपत) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

डा. शफीकुर्रहमान बर्क (मुरादाबाद) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री अमर अब्दुल्लाह (श्रीनगर) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री सी. के. चन्द्रप्पन (त्रिचूर) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री अजय चक्रवर्ती (बसीरहाट) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री सुरवरम सुधाकर रेड्डी (नालगौंडा) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री रूपचन्द पाल (हुगली) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री हन्नान मोल्लाह (उलूबेरिया) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं:

श्री पी. के. वासुदेवन नायर (तिरुअनन्तपुरम) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री गुरूदास दासगुप्त (पंसकुरा) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री एन. एन. कृष्णदास (पालघाट) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री बीर सिंह महतो (पुरूलिया) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री हितेन बर्मन (कूचबिहार) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री सनत कुमार मंडल (जयनगर) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री जोवाकिम बखला (अलीपुरद्वार) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा पेश किया गया और श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा समर्थित प्रस्ताव सभा के विचारार्थ प्रस्तुत है। मैं इस प्रस्ताव को सभा के मतदान के लिए रखता हूं।

प्रश्न यह है :

"कि श्री सोमनाथ चटर्जी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और श्री सोमनाथ चटर्जी को इस सभा का अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया जाता है। अब मैं उन्हें सहर्ष आमंत्रित करता हूं कि वह आकर अध्यक्ष का आसन ग्रहण करें।

(प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह, सदन के नेता श्री प्रणव मुखर्जी और विपक्ष के नेता, श्री लाल कृष्ण आडवाणी श्री सोमनाथ चटर्जी को अध्यक्षपीठ तक ले गए)

पूर्वाह्न 11.29½ बजे

अध्यक्ष महोदय (श्री सोमनाथ चटर्जी) पीठासीन हुए।)

पूर्वाह्न 11.30 बजे

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय को बधाई

प्रधानमंत्री (डा. मनमोहन सिंह) : माननीय अध्यक्ष महोदय, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक बार कहा था कि राज्य के मामले में व्यक्ति को संवदेनशील तो होना चाहिए पर भावुक नहीं। आप मुझे इस अवसर पर कुछ भावुक होने के लिए क्षमा करें।

50 वर्ष पहले, जब मैंने महाविद्यालय से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी तथा डिग्री प्राप्त की थी तब आपके पिताजी ने दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता की थी और आज, महोदय, जब मैं नया पदभार ग्रहण करने वाला हूं तो आप इस आसन पर हमारे मार्गदर्शक, मित्र और दार्शनिक के रूप में विराजमान हैं।

महोदय, इस सम्मानित सभा का सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने पर मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से आपको बधाई देता हूं और आपका अभिनन्दन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, आप तीन दशक से भी अधिक समय से इस सम्मानित सभा के जाने--माने सदस्य रहे हैं। कुछ वर्ष पूर्व, इस सभा के सदस्यों ने सभा की कार्यवाही में आपके व्यापक योगदान को देखते हुए आपको उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार से सम्मानित किया था, जो कि सर्वथा उचित है, और अब इन्हीं सदस्यों ने एक बार फिर आपको इस सम्मानित सभा का सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना है।

महोदय, एक सांसद के रूप में आपका जीवन और कृत्य हममें से कई लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं। आपकी तरह, मैंने सदैव इस बात में विश्वास किया है कि राजनीति को सामाजिक परिवर्तन के एक साधन के रूप में लिया जाना

चाहिए। इस परिकल्पना को साकार करने के लिए इस सम्मानित सभा के सदस्यों की बहुत अधिक जिम्मेदारी है और महोदय हमने स्वयं के मार्गदर्शन के लिए आपके रूप में एक बहुत ही कुशल पथ प्रदर्शक पाया है। मेरी पार्टी तथा संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन के सदस्य वाद–विवाद, चर्चा के स्तर में सुधार लाने तथा हमारी कार्यवाहियों के विधायी कार्यों की दिशा में किये जाने वाले कार्यों में सदैव आपके साथ होंगे।

अध्यक्ष महोदय, यह सभा हमारे विशाल और बहुलतावादी राष्ट्र की विविधता को परिलक्षित करती है और यहां होने वाले वाद–विवाद हमारे लोकतंत्र में मत की भिन्नताओं को व्यक्त करते है। तथापि, जिस तरह से हमारी सभा की कार्यवाहियों का संचालन होता है और जनता से किये गये अपने वायदों को पूरा करने के लिए हम जिस तरह से स्वयं को प्राप्त समय का सदुपयोग करते हैं, उसी से यह तय होता है कि राष्ट्र निर्माण के अपने पावन प्रयास में हम कितने प्रभावकारी ढंग से अपना योगदान कर सकते हैं।

महोदय, आपकी बुद्धिमता तथा हमारे गणतंत्र और इसके आदर्शों के प्रति आपकी वचनबद्धता को देखते हुए, मुझे पूरा विश्वास है कि आप इस सभा की कार्यवाही का संचालन हमारे महान लोकतंत्र की उच्चतम परम्पराओं को ध्यान में रखकर करेंगे। महोदय, मैं संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन और अपनी पार्टी की और से आपको पूरी तरह से और वास्तविक रूप से सहयोग देने का आश्वासन देता हूं। अध्यक्ष महोदय, मैं हृदय से कामना करता हूं कि आप हमें प्रदत्त समय का सार्थक उपयोग करने में अपने दायित्व का अच्छी तरह निर्वहन कर सकें ताकि हम जनता से किये गये अपने वायदों को पूरा कर सकें, अपने लोगों, विशेषकर समाज के वंचित लोगों के जीवन में आशा की किरण ला सकें। हम अपने राष्ट्र को एक आधुनिक, प्रगतिशील, खुला, धर्मनिरपेक्ष और उदार लोकतंत्र तथा न्याय पर आधारित समाज की दिशा में अग्रसर करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। महोदय, आपके मार्गनिर्देशन में यह सभा राष्ट्र को निराश नहीं करेगी। मुझे पूरा भरोसा है कि यहां पर किया जाने वाला विचार–विमर्श तार्किकता और दया भावना पर आधारित होगा और यह शासन की प्रक्रियाओं में कुशलता और समानता दोनों के प्रति गहन वचनबद्धता को दर्शायेगा।

महोदय, हमें अपने आदर्शवाद के उन उच्च मानदंडो को दोहराना होगा जिन्होंने हमारे स्वतंत्रता संघर्ष को प्रेरित किया। इस आदर्शवाद को रवीन्द्रनाथ टैगोर की इस कविता में सर्वोत्तम ढंग से व्यक्त किया गया है और मैं इस प्रार्थना के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा कि हम अपने विचार–विमर्श में आपके विशिष्ट मार्गनिर्देशन के अंतर्गत इस कविता में प्रतिध्वनित उच्च आदर्शों पर खरे उतर सकें :–

"व्हेयर दि माइन्ड इज़ विदाउट फियर,
एंड दि हेड इज हेल्ड हाई; व्हेयर नालिज इज़ फ्री;
"व्हेयर दि वर्ल्ड हैज नाटबीन ब्रोकेन अप इनटू फ्रैगमेंट्स बाई नैरो डोमेस्टिक वाल्स;
"व्हेयर वर्ड्स कम आउट फ्राम दि डेप्थ ऑफ ट्रुथ;
"व्हेयर टायरलेस स्ट्राइविंग स्ट्रेचेज़ इट्स आर्म्स टुवर्ड्स परफेक्शन;
"व्हेयर दि क्लीयर स्ट्रीम ऑफ रीजन हैज नाट लॉस्ट इट्स वे इनटु दि ड्रियरी डिसर्ट सैन्ड आफ डेड हैबिट;
"व्हेयर दि माइन्ड इज़ लेड फारवर्ड बाई दी इनटु एवर–वाइडेनिंग थाट एंड ऐक्शन
इनटु दि हैवेन ऑफ फ्रीडम, माई फरार लेट माई कन्ट्री अवेक"

महोदय इस अवसर पर मैं एक बार फिर से आपको बधाई देता हूं।

रक्षा मंत्री (श्री प्रणब मुखर्जी) : अध्यक्ष महोदय, इस सम्मानित पद पर आपके सर्वसम्मति से चुने जाने पर प्रधान मंत्री के साथ मैं अपनी बधाई देता हूं।

महोदय, नये संविधान के अंतर्गत गठित पहली लोकसभा में आपके प्रतिष्ठित पिताजी को इस सम्मानित सभा का सदस्य होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आप 1971 से इस सभा के सदस्य हैं। आपने न केवल सभा के विचार–विमर्श में अपना योगदान दिया है अपितु आपके योगदान के कारण जब आपका नाम उत्कृष्ट सांसदों में सम्मिलित होता है, तो इससे पता चलता है कि एक बुद्धिजीवी के साथ–साथ आप कितने सहृदय व्यक्ति हैं।

महोदय, आज आप श्री विट्ठलभाई पटेल से लेकर श्री मावलंकर तक तथा ऐसे अनेक प्रतिष्ठित पूर्ववर्तियों की कतार में शामिल हो गये हैं। जिन्होंने न केवल इस पद की प्रतिष्ठा में वृद्धि की अपितु हमारे संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य की गरिमा और प्रतिष्ठा को भी बढ़ाया।

महोदय, यह भव्य कक्ष कई इतिहासों का साक्षी है। यदि मैं ठीक से याद कर पा रहा हूं, तो स्वतंत्रता से काफी पहले 1924 में, केन्द्रीय विधान सभा (तब इसे इसी नाम से जाना जाता था) की स्वतंत्रता का प्रश्न उठाया गया था और तब स्वराज पार्टी के नाते तत्कालीन अध्यक्ष श्री मोतीलाल नेहरू की प्रेरणा से यह प्रस्ताव पेश किया गया था कि केन्द्रीय विधान सभा को कार्यपालिका के नियंत्रण में न रखकर इसे अध्यक्ष के नियंत्रणाधीन लाया जाये। और तब से हमने इस परम्परा का निर्वाह किया है। जैसा कि प्रधान मंत्री जी ने उचित कहा है कि आप इस सभा के संरक्षक होंगे और हमारी मार्गदर्शन करेंगे। हम यह भी आशा रखते हैं कि आप अपने अनुभव से और संविधान

की वृहत् जानकारी रखने के कारण आप धन और वित्त पर इस सभा के अधिकार को अक्षुण्ण रखेंगे। इस सभा की अनुमति के बिना भारत की संचित निधि से एक पैसा भी खर्च नहीं किया जा सकता है। लेकिन, दुर्भाग्य से, दूसरे मामलों में व्यस्त होने के कारण हमने सभा के इस पहलू की अनदेखी की है। मुझे अच्छी तरह याद है जब हमारा बजटीय कारोबार चार अंकों से आगे नहीं बढ़ता था और जब हमारी पहली पंचवर्षीय योजना 2000 करोड़ रुपये की बनायी गयी थी, तब संसद, विशेषकर लोकसभा अपना दो–तिहाई से अधिक समय धन और वित्त से संबंधित मामलों पर व्यय करती थी। और अब जबकि बजटीय कारोबार चार लाख करोड़ रुपये से भी अधिक हो गया है, तब हमारे पास इस पर विचार करने; इसकी संवीक्षा करने के लिए समय नहीं है। मैं आशा करता हूं कि आपके मार्ग निर्देशन में संसद कार्यपालिका पर अपना प्राधिकार जमा सकेगी और यहां पर होने वाला वाद–विवाद और विचार–विमर्श आने वाली नई पीढ़ी के लिए निश्चित तौर पर प्रेरणादायी रहेगा।

अध्यक्ष महोदय, आपका बहुत–बहुत धन्यवाद और मेरी ओर से एक बार फिर आपको हार्दिक–बधाई।

[हिन्दी]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी (गांधीनगर) : सर्वसम्मति से इस सदन द्वारा निर्वाचित चौदहवीं लोक सभा के नये अध्यक्ष महोदय, अपनी ओर से, अपने दल की ओर से, विपक्ष की ओर से, एनडीए की ओर से, मैं आपका बहुत–बहुत अभिनंदन करता हूं। मेरे वरिष्ठ सहयोगी श्री वाजपेयी जी की भांति, मेरा–आपका इस लोक सभा में संबंध बहुत पुराना नहीं है क्योंकि मेरे संसदीय जीवन का आधा हिस्सा राज्य सभा में बीता है। लेकिन इस समय मुझे स्मरण आता है कि कितनी सारी संयुक्त समितियां थीं जिनमें आपकी प्रतिभा, आपकी अध्ययनशीलता, आपकी कर्मठता और आपकी देश का भला करने की इच्छा का परिचय मिला था। आपको स्मरण होगा कि जितनी भी समितियां चुनाव सुधार के संबंध में बनी थीं, उन सब में आप भी रहे हैं, मैं भी रहा हूं और अधिकांश में वाजपेयी जी भी रहे हैं। हम सब ने मिलकर कोशिश की कि लोकतंत्र अधिक स्वस्थ हो और इस दृष्टि से चुनाव कानून में सही प्रकार का सुधार हो। अभी–अभी प्रणब मुखर्जी ने सन् 1924 का श्री विट्ठल भाई पटेल जी का स्मरण दिलाया। वह बात बहुत प्रसिद्ध और ऐतिहासिक है। मुझे याद आता है उस समय सेंट्रल लैजिस्लेटिव असेम्बली इस सदन में नहीं थी। यह सदन बना भी नहीं था। जहां आज दिल्ली की विधान सभा है वहां सेंट्रल लैजिस्लेटिव असेम्बली का चैम्बर हुआ करता था। उसी चैम्बर में जब महानगर परिषद बनी थी मैट्रोपोलिटन कौंसिल का अधिवेशन वहां हुआ था। अपने सार्वजनिक जीवन में अगर मैंने सबसे पहले कोई जवाबदेही सम्भाली थी तो वह महानगर परिषद् के अध्यक्ष के रूप में थी। सबसे बड़े फोरम की जैसे जवाबदारी आपकी है उस छोटे से फोरम में मेरी जवाबदारी थी। तब मैंने अध्यक्ष के रूप में उसकी भूमिका क्या होनी चाहिए और उसको क्या–क्या करना चाहिए, उसको पढ़ने और जानने की कोशिश की थी। मैं कह सकता हूं कि आपमें जो योग्यता है, जो प्रतिभा है, वह निश्चित रूप से इसके लिए बहुत उपयोगी होगी। इसी सदन में पिछले चार–पांच सालों में हमने बालयोगी जी को देखा, मनोहर जोशी जी को देखा और सब लोगों ने मिलकर उनको चुना था। लेकिन तब में और आज में एक अंतर है। इसके लिए मैं वाजपेयी जी को श्रेय दूंगा। आज विपक्ष ने भी आपके नाम का प्रस्ताव किया है। पहले शायद यह नहीं हो सका। मैं मानता हूं कि विचारधाराएं अलग–अलग होते हुए भी, हम किसी विचारधारा को, कम से कम कुछ मामलों में अस्पृश्य न मानें तो उपयुक्त होगा। मैं स्वयं इस बात को मानता हूं कि विचारधारा के बारे में अपने विचार प्रकट करने के अवसर बहुत सारे आते हैं लेकिन स्पीकर जैसे पद के चुनाव के लिए अगर कोई स्थिति आती है तो उसमें विचारधारा के मतभेदों को बीच में नहीं आने देना चाहिए और जिस प्रकार से वाजपेयी जी ने प्रस्ताव किया, उसी प्रकार से प्रस्ताव हो और सर्वसम्मति से आपका चयन हो, यह बहुत ही श्रेष्ठ है, बहुत खुशी की बात है। मैं उन दिनों को याद करता हूं जब मैं स्वयं इस प्रकार के पद पर था। तब मैंने दो विशेष वाक्य पढ़े थे। एक वाक्य था–

[अनुवाद]

–"विडंबना यह है कि सभा का 'स्पीकर" (अध्यक्ष) ऐसा सदस्य होता है जो कम से कम बोलता है।"

दूसरी बात यह है कि जहां तक विपक्ष का संबंध है, अध्यक्ष को सदैव यह बात सुनिश्चित करनी होती है कि विपक्ष अपनी बात कह सके क्योंकि उसे पता होता है कि बहुमत होने के नाते सरकार हमेशा वही करती है जो वह करना चाहती है। इसलिए अध्यक्ष का यह दायित्व बनता है कि वह यह सुनिश्चित करे कि विपक्ष अपनी बात कह सके।

[हिन्दी]

मैंने अपने समय में कोशिश की थी। मुझे विश्वास है कि आपकी जैसी प्रकृति है, आपका जैसा स्वभाव है, उसमें यह जरूर होगा। मैं आपको इस नए दायित्व के लिए बहुत–बहुत बधाई देता हूं।

[अनुवाद]

श्रीमती सोनिया गांधी (रायबरेली) : नवनिर्वाचित माननीय अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी के सम्मान में, मैं कुछेक शब्द कहना चाहूंगी।

सोमनाथ जी की संसदीय दक्षता को सभी ने पहचाना है और उसकी सराहना की है। उनकी कानून से संबंधित विद्वता की काफी सराहना हुई है, और यदि मुझे यह कहने की अनुमति हो, उन्हें उसका प्रतिफल भी प्राप्त हुआ है। लेकिन आज मैं एक ऐसे सोमनाथ जी का अभिनन्दन कर रही हूं जो हमारे बहुत ही सम्मानित सहयोगी हैं और जिनसे मैंने और मेरी पार्टी ने समय–समय पर सलाह ली है और उसे महत्व दिया है।

आज यहां पर उनका सम्मान करते हुए, हम एक बार फिर भारत की महान परम्परा, उसकी विविधता और बहुलता में अपना गहन और दृढ विश्वास व्यक्त करते हैं। जिस चुनाव से हम सब निर्वाचित होकर इस सभा में पहुंचे हैं उसका संदेश बिल्कुल स्पष्ट है और वह संदेश यह है कि हमारे देश के लोगों ने विभाजनकारी राजनीति को सिरे से नकार दिया है। सोमनाथ जी का बहु–आयामी व्यक्तित्व इस जनादेश को कई तरह से व्यक्त करता है। वह आधुनिक विचारों वाले एक ऐसे व्यक्ति कहे जा सकते हैं जिनकी जड़े परंपराओं से गहरे तक जुड़ी हैं और जो मूलतः विचारधारा के पक्षधर होते हुए भी पूरी तरह व्यावहारिक दृष्टिकोण रखते हैं। उनमें ऐसी विलक्षण क्षमता है कि वह कतिपय मूलभूत सिद्धांतों के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ रहते हुए भी दलीय राजनीति से ऊपर उठकर सबको अपना मित्र बना लेते हैं। सोमनाथ जी की भारतीय संस्कृति के उदार मूल्यों में अटूट आस्था है, लेकिन वह ऐसे लोगों के साथ वाद–विवाद और चर्चा करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं जो उन मूल्यों में उनकी अगाध आस्था से सहमत नहीं हैं। आज उनका सम्मान करते हुए हम एक ऐसे व्यक्ति का सम्मान कर रहे हैं जिसने तीन दशकों से भी अधिक समय से अपने पांडित्य, अपनी बुद्धिमता और अपने व्यापक अनुभव से इस सभा को सुशोभित किया है।

सोमनाथ जी ने इस गरिमापूर्ण सदन की कार्यवाही तथा वाद–विवाद के स्तर का सुधार किया है। मैं समझती हूं कि एक अध्यक्ष के नाते, उन्हें बोलना कम तथा सुनना अधिक पड़ेगा। हमें उनके वाद–विवाद सुनने को नहीं मिलेंगे। तथापि मुझे विश्वास है कि उनकी नयी भूमिका से हमारा राजनीतिक जीवन अपरिमित रूप से लाभान्वित होगा।

मैं अपनी ओर से तथा अपनी पार्टी की ओर से सभा में तथा उनके चैम्बर में जहाँ–अधिकतम संसदीय कार्यवाही संपादित होती है, उन्हें हर समय अपने संपूर्ण सहयोग का आश्वासन देना चाहती हूं। मैं जानती हूं कि वे निष्पक्ष रहेंगे। मैं जानती हूँ कि उनके विनिर्णय हमेशा ही तार्किक एवं संतुलित होंगे और उनके निर्णय राष्ट्र हित में समझे जाएंगे।

अध्यक्ष महोदय, यह आपके लम्बे तथा प्रतिष्ठित जीवन में एक नई पारी की शुरूआत होगी। हमारी शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : अध्यक्ष महोदय, आज आप सदन के सम्मानित सदस्यों की श्रेणी से हटकर अध्यक्ष पद पर विराजमान हैं। हमारी शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

आप सदस्य के नाते अपने दायित्व का भली–भांति निर्वाह करते रहे। सत्ता पक्ष पर, जहां अंकुश लगाना जरूरी होता था, आप उसमें भी चुकते नहीं थे और संसद की मर्यादा को कायम रखते हुये आप अपने विचारों का प्रगटीकरण करते थे। आज, जबकि संसद बहुदलीय हो गई है, इस बात की आवश्यकता बढ़ गई है कि अध्यक्ष के पद पर विराजमान व्यक्ति निष्पक्षता से काम ले, सदन का सही दिशा में संचालन करे और सदन की भी यह जिम्मेदारी है कि वह आपको पूरा सहयोग देकर सदन को ठीक तरह से चलाने में सहायक हो।

अध्यक्ष महोदय, कुछ दिनों से सदन में ऐसी प्रवृत्तियां दिखाई देने लगी हैं जिनको रोकना ज़रूरी है। मैं नहीं समझता कि आपके ज़माने में फिर से कोई ऐसा मौका आयेगा कि किसी सदस्य को इस स्थान से हटकर कुएं में कूदना पड़ेगा। कुएं में कूदने की आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिये क्योंकि आप उससे पहले ही यह समझकर कि वह कुएं में कूदने वाला है, ऐसा उपाय करेंगे जिससे कि इस शस्त्र का उपयोग करने की आवश्यकता ही न पड़े। यह सौ करोड़ का देश हैं जिस तरह हमने चुनावों का संचालन किया है, जिस तरह हम लोकतंत्र के अंतर्गत अपना शासन चला रहे हैं, वह संसार के लिये एक उदाहरण है। हम भी उसमें एक उदाहरण बनकर अपनी भूमिका निभायें, इस बात की आवश्यकता है।

अध्यक्ष महोदय, सदस्य के नाते आप बहुत बोल लेते थे, अब थोड़ा कम बोलना पड़ेगा। बोलपुर से आप निर्वाचित हुये हैं, बोलकर काम नहीं चलेगा, चुप रहने से काम चलेगा।

[अनुवाद]

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : अध्यक्ष महोदय, मेरी ओर से तथा सभी वाम दलों की ओर से, मैं आपको इस उच्च पद पर कार्य ग्रहण करने पर बधाई देता हूँ।

इस सदन में अपने 24 वर्षों के दौरान मैंने नहीं देखा है कि कोई अध्यक्ष सम्पूर्ण सदन के अत्यधिक समर्थन से चुना गया हो। सदन के सभी वर्गों से आपको मिला ऐसा अत्यधिक समर्थन मैंने पहली बार देखा है।

हमें यह देखकर प्रसन्नता है कि संसद का लम्बे समय से अनुभव वाला आप जैसा प्रतिष्ठित सांसद इस उच्च पद पर आसीन हुआ है। यह सर्वसम्मति से हुआ है जो यह दर्शाता है कि भारतीय लोकतंत्र परिपक्व हो गया है। जो अब हाल ही में हुए लोक सभा चुनावों से प्रतिबिंबित हुआ है।

महोदय, इस गरिमापूर्ण अवसर पर हमें दोहरी प्रसन्नता एवं गर्व है क्योंकि आप मेरी पार्टी के नेता हैं तथा वाम मोर्चा के अग्रणी नेता हैं। जब आप विपक्ष में थे तो हमने देखा है कि सभी विपक्षी दलों तथा हमारे देश की धर्म-निरपेक्ष ताकतों को आपने कितनी ईमानदारी से संगठित करने का प्रयास किया है। धर्म-निरपेक्षता में विश्वास करने वाली सभी राजनीतिक पार्टियों को संगठित करने में आप अग्रणी रहे।

महोदय, यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि सदन की कार्यवाही चलाने में आप अत्यन्त सफल रहेंगे तथा न केवल भारत की मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता को बल्कि सभी को न केवल नेताओं को बल्कि सदन के सभी सदस्यों को तथा सदन के सभी वर्गों को सुनेंगे एवं उन्हें बोलने का मौका देंगे। महोदय, इस बार अधिकतर सदस्य नए हैं। उनमें से अधिकतर पहली बार सदन के लिए चुने गए हैं। हमने यह भी देखा है कि आपने कैसे इस सदन की गरिमा एवं मर्यादा बनाए रखने के लिए हमेशा प्रयास किया है। आपके अध्यक्ष पद पर आसीन होने से हम यह आशा करते हैं कि सदन की गरिमा एवं मर्यादा जो पिछले कई वर्षों से गिरी है, आपके मार्गदर्शन तथा नेतृत्व में ऊपर उठेगी।

महोदय, आपके व्यक्तित्व में उत्कृष्ठ गुण है जिससे हमारे देशवासियों एवं बाहरी विश्व में यह संदेश जाता है कि जन-प्रतिनिधि अत्यधिक दायित्व एवं उचित प्रकार से कर्म कर रहे हैं जो कि आवश्यक है पहले हमने देखा है कि ज्वलंत मुद्दे एवं समस्याएं हैं जिनसे देश की जनता जूझ रही है। हमारे देश में गरीबी है, बेरोजगारी है तथा भूख से लोग मर रहे हैं। हम, जन प्रतिनिधियों को शिकायतों के बारे में आम चर्चा करने का मौका मिलना चाहिए...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : ऐसा लगता है कि मुझे भारत की मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता से ही निमंत्रण शुरु करना पड़ेगा। कृपया अपनी बात समाप्त करने का प्रयास करें।

श्री बसुदेव आचार्य : महोदय, आप के इस उच्च पद पर आसीन होने से हम एक महान वक्ता एवं एक नेता से वंचित हो गए। मैं आपके लिए सभी सफलताओं की कामना करता हूँ तथा मैं आपके सभी प्रकार के सहयोग, सभी दलों की ओर से सम्पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता हूँ।

अध्यक्ष महोदय : बहुत-बहुत धन्यवाद।

मध्याह्न 12.00 बजे

[हिन्दी]

प्रो. राम गोपाल यादव (संभल) : महोदय, सर्वसम्मति से लोक सभा का अध्यक्ष चुनने पर मैं अपनी ओर से तथा समाजवादी पार्टी की ओर से आपका स्वागत करता हूं और आपको बधाई देता हूं।

श्रीमान् आपका लम्बा, बेदाग और यशस्वी संसदीय जीवन रहा है। जिस पद पर आप पहुंचे है। उसका एवोल्यूशन, ब्रिटिश हाउस आफ कॉमन्स से लेकर अब तक का एक बहुत ही इंटरेस्टिंग इतिहास रहा है। कभी राजा की तरफ से संसद सदस्यों से बात कहना और बाद में ससंद सदस्यों की तरफ से राजा से बात कहना, इसलिए इस पद का नाम स्पीकर पड़ा है और आज हमने भी उसे एडॉप्ट किया है। लेकिन वे अलग परिस्थितियां थीं जिनमें किस तरह से लीडर आफ दि अपोजीशन और लीडर आफ दि हाउस, स्पीकर को उस पद तक ले जाते थे। उसका इतिहास बहुत ही इंटरैस्टिंग रहा है। ऐसा उस वक्त हुआ करता था कि निरंकुश राजा कभी-कभी स्पीकर को जेल में डाल देता था या सर कटवा देता था। इसलिए उस पद पर जाने के लिए कोई तैयार नहीं होता था, जबरन ले जाया करते थे। वही आज बहुत सम्मानजनक परम्परा हो गई है जिसमें स्पीकर आसन तक जाते हैं और उन्हें लीडर आफ दि हाउस तथा लीडर आफ दि अपोजीशन ले जाते हैं, ऐसा हो रहा है।

महोदय, मैं पहली बार लोक सभा में चुनकर आया हूं। 12 साल से मैं राज्य सभा का सदस्य था। राज्य सभा से कभी-कभी लॉबी में आकर आपका भाषण सुनने के लिए आया

करता था। माननीय आडवाणी जी ने गृह मंत्री के रूप में हाईपावर्ड स्टेट फंडिंग कमेटी बनाई थी, उसमें मुझे आपके साथ रहने का अवसर मिला, जिसके अध्यक्ष माननीय स्व. इन्द्रजीत गुप्त थे।

महोदय, आप इस सदन को अपने पूर्ववर्ती यशस्वी स्पीकर्स की तरह चलाएंगे, इसमें दो राय नहीं हैं, लेकिन एक बात मैं अवश्य कहना चाहता हूं कि कई बार राष्ट्र–हित में, राज्य के हित में और संसद सदस्य, अपने क्षेत्र के हित में अपनी बात कहना चाहता है और तब भी कहना चाहता है जब आसन उसे अनुमति नहीं देता है। उस स्थिति में जब आसन की अवज्ञा भी यदि कोई संसद सदस्य करता है, तो संसद सदस्य के मन में स्पीकर के प्रति सम्मान में कभी कमी नहीं होती है। यह चीज हमेशा स्पीकर के मन में रहनी चाहिए और आपसे मेरी प्रार्थना है कि किसी सांसद सदस्य को इस रूप में न लिया जाए कि वह मेरी अवज्ञा कर रहा है या मेरा अपमान कर रहा है। आप जैसे सीनियरमोस्ट व्यक्ति के बारे में सभी के मन में सम्मान रहेगा।

महोदय, ब्रिटेश हाउस आफ कामन्स में जो परम्परा है कि

[अनुवाद]

जो व्यक्ति एक बार 'स्पीकर' बन गया वही सदा के लिए स्पीकर होगा।

[हिन्दी]

मुझे लगता है कि इस सदन में भी अब वह वक्त आ गया है जब बंगाल की जनता आने वाले दिनों में स्पीकर को निर्विरोध निर्वाचित कर के भेजे और इस परम्परा को नए सिरे से हिन्दुस्तान में पहली बार प्रारम्भ करने का अवसर मिलेगा।

महोदय, इस वक्त सिर्फ मेरी यही कामना है कि आप न केवल हिन्दुस्तान में, बल्कि दुनियां में यश फैलाएं। आपका यश तो पहले ही दुनियां में फैला हुआ है और आपको एक बढ़िया पार्लियामैंटेरियन के रूप में जाना जाता है, लेकिन मेरी कामना है कि जिस पद पर आज आप हैं उससे अगली सीढ़ी पर भी आप पहुंचे। इसी के साथ बहुत–बहुत धन्यवाद।

रेल मंत्री (श्री लालू प्रसाद) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी पार्टी की तरफ से और अपनी तरफ से आपके सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने पर, आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं और बधाइयां देता हूं।

महोदय, अत्यन्त प्रसन्नता इस बात की है कि आप मेरे पडोसी राज्य के हैं। जिस पार्टी से आप आते हैं। इस आसन पर बैठने के बाद आपकी वह पार्टी नहीं रही। अभी श्री बसुदेव आचार्य जी ने कहा कि आप उनकी पार्टी से हैं।

श्री बसुदेव आचार्य : मैंने यह कहा था कि वे मेरी पार्टी से थे।

श्री लालू प्रसाद : नही, आप "हैं" बोले, "थे" नहीं।

श्री बसुदेव आचार्य : मैंने कहा था 'वह थे'।

श्री लालू प्रसाद : ठीक है, अब आपने करैक्ट कर लिया है। अध्यक्ष महोदय, जब आप प्रतिपक्ष में थे, हम लोग भी उसी तरफ थे और तब हम लोग धड़ल्ले से, सत्ता पक्ष की बुराई करते थे और उस पर हमला करते थे, प्रहार करते थे। अब आपको इस सदन का सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुनकर भारतीय संसदीय लोकतंत्र ने एक मिसाल पेश की है। यह देश के लिए बहुत सुखद है।

महोदय, यह कोलिशन इरा है और भविष्य में भी कोलिशन रहेगा, संविद की सरकारें चलेगी, मैं कोई दूसरा विकल्प नहीं देखता हूं।

महोदय, इस देश में जटिल से जटिल समस्याएं हैं। हम आशा करते हैं कि आपके मार्गदर्शन से देश में जो गरीबी, गुरबत, तकलीफ और बेरोजगारी है, माननीय सदस्य इस गर्मी के माहौल में चुन कर आए हैं और आपके अध्यक्ष चुने जाने पर ज्यादा से ज्यादा लोगों ने प्रसन्नता जाहिर की है, हिन्दुस्तान की यह सबसे बड़ी पंचायत है, यह हाउस एक डेकोरम के साथ आपके निर्देशन में, देश की समस्याओं पर चर्चा करे, जो वंचित गरीब, सताए हुए और माइनोरिटी के लोग हैं, उनके सवालों पर विशेष चर्चा इस सदन में हो, यह हम आशा करते हैं।

अंत में बिना समय का नुकसान किए हुए मैं आपको शुभकामना और बधाइयां देता हूं। पूर्व प्रधानमंत्री जी ने ठीक ही कहा है कि जब आप प्रतिपक्ष में थे तो तेज–तर्रार होकर बोलते थे, अब आपको कम बोलना पड़ेगा और मैं समझता हूं कि आपको बहुत भोगना भी पड़ेगा। मैं सभी पक्ष के लोगों से अपील करता हूं कि जिस भाषा में, जिन लोगों ने आपको सदन का सफल संचालन करने के लिए आवश्स्त किया है, अपने संकल्पों पर वे सब कायम रहेंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि अपने दल की तरफ से पूरा सहयोग दूंगा और आपके मार्गदर्शन में हम लोग चलेंगे।

कुमारी मायावती (अकबरपुर) : महोदय, आज आपको इस सदन का निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया है, जिसके लिए मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से आपको मुबारकबाद देती हूं।

मान्यवर, अभी तक मैंने आपमें सबसे बड़ी विशेषता यह देखी है कि आपका व्यक्तित्व हमेशा सब को साथ में लेकर चलने वाला रहा है, जोकि इस पद की गरिमा को बनाए रखने के लिए बहुत जरूरी है। दूसरे, आपका राजनीतिक प्लेटफार्म ऐसा रहा है कि आप आम लोगों की बुनियादी समस्याओं से जुड़े हुए हैं, इसलिए आप इस पद पर बैठ कर उनकी ओर ज्यादा ध्यान देंगे। इसके साथ–साथ मैं यह भी कहना चाहती हूं कि इस देश में जो वीकर सैक्शन के लोग हैं, खास तौर से अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ा वर्ग और धार्मिक अल्पसंख्यक समाज से संबंध रखने वाले जो सिख, मुस्लिम, ईसाई, पारसी और बुद्धिस्ट लोग हैं, इन लोगों की पापुलेशन इस देश में बहुत ज्यादा है। आज भी आजाद भारत में ये लोग विभिन्न समस्याओं से जूझ रहे हैं। जब इनके वेलफेयर या डेवलपमेंट के लिए कुछ इशूज़ पार्लियामेंट में आते हैं तो आप उनकी तरफ जरूर ध्यान देंगे और जब महत्वपूर्ण मुद्दे पार्लियामेंट में उठते हैं तो आप उसमें पर्सनल दिलचस्पी लेकर इस पद पर बैठ कर, उनके हितों का जरूर ध्यान रखेंगे।

महोदय, इसके साथ–साथ मेरा आपसे यह भी कहना है कि इस सदन में कई न्यू एमपीज़ हैं, जो पहली बार चुन कर आए हैं, खास तौर पर से कुछ ऐसे भी छोटे दल हैं, जिनके दो–दो, तीन–तीन एम.पी. चुन कर आए हैं, उन्हें भी आप जरूर अपोरचुनिटी देंगे।

अंत में मैं आपको अपनी ओर से और पार्टी की ओर से यह विश्वास दिलाती हूं कि इस हाउस को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक डिसिप्लिन्ड–वे में हमारी पार्टी हर प्रकार से आपको पूरा सहयोग देगी। आपको ऐसा नहीं लगेगा कि हमारी पार्टी की ओर से हाउस को चलाने में आपको कोई दिक्कत आ रही है। हम हर मामले में आपको पूरा सहयोग देंगे, लेकिन आपसे मेरी यह रिकवेस्ट है कि वीकर सैक्शन के हित में आप भी हमें पूरा कोआपरेट करेंगे। इन्हीं लफ्जों के साथ मैं आपको फिर से अध्यक्ष पद के निर्विरोध चुने जाने पर हार्दिक बधाई एवं मुबारकबाद देती हूं।

अध्यक्ष महोदय : बहुत–बहुत धन्यवाद।

[अनुवाद]

श्री सी. कुप्पुसामी (मद्रास उत्तर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, वनक्कम। माननीय डॉ. कलाइगन्नर एम. करूणानिधि, अध्यक्ष, द्रविड मुनेत्र कषणम् तथा द्रमुक पार्टी के जनसाधारण की ओर से मैं आपको बधाई तथा भरपूर समर्थन देता हूँ। महोदय, चोदहवीं लोकसभा के अध्यक्ष के रूप में अपने उत्कृष्ट राजनीतिक जीवन में आपने एक नया अध्याय प्रारम्भ किया है।

हमारे संस्थापकों ने हमारे महान देश के लिए संसदीय शासन प्रणाली अपनाने का निर्णय लिया था। हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली में राज्य सभा के साथ–साथ लोक सभा का निर्णायक स्थान में लोकतांत्रिक रूप से चुने हुए प्रतिनिधि के रूप में संसद हमें आम जनता, किसानों, कामगारों तथा समाज के कमजोर वर्गों की समस्याओं को सामने लाने तथा उनका समाधान करने का पावन अवसर प्रदान करती है।

1971 से ही अपनी लम्बी पारी के दौरान भारतीय संसद में आपने विविधतापूर्ण इतिहास बनाया है। हमारी संसदीय प्रणाली को प्रत्येक पहलू से सशक्त बनाने के लिए आपके अपरिमित तथा अमूल्य योगदान के मान्यता स्वरूप आपको 1997 में उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

अध्यक्ष महोदय, यह गरिमापूर्ण सदन और यह महान देश अच्छी तरह से जानता है कि आप दलितों, सर्वाधिक जरूरत–मंदों, शोषितों, किसानों, श्रमिकों तथा कामगारों और भारतीय समाज के मेहनतकश लोगों की आवाज उठाते रहे हैं जो इस महान सदन में कई दशकों तक गूँजती रही है।

महोदय, मैं अत्यधिक प्रसन्नता एवं गर्व के साथ एक बार फिर आपको चौदहवीं लोकसभा के माननीय अध्यक्ष का कार्यभार ग्रहण करने पर बधाई देता हूँ।

[हिन्दी]

श्री चन्द्रकांत खैरे (औरंगाबाद, महाराष्ट्र) : अध्यक्ष जी, मैं आपको शिवसेना की ओर से बहुत–बहुत बधाई देता हूं और कामना करता हूं कि आपका कार्यकाल बहुत अच्छा और सफल हो। आपका नाम सोमनाथ जी है, हो सकता है कि आपके पितामह ने यह नाम आपको एक हिन्दुत्ववादी होने के कारण दिया हो। मैं उसी 12 ज्योतिर्लिंग के सोमनाथ जी से प्रार्थना करता हूं कि आपका कार्यकाल बहुत ही सफल हो। भले ही आप साम्यवादी हैं, आपके साम्यवादी होने के कारण से भी मैं यह कहूंगा कि बंगाल और महाराष्ट्र का एक बहुत पुराना रिलेशन है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं आपका नाम अच्छी तरह से जानता हूं। कृपया अपना भाषण जारी रखें।

[हिन्दी]

श्री चन्द्रकांत खैरे : मराठी और बंगला में बहुत साम्यता है। मैं यह कहूंगा कि जैसे ही माननीय मनोहर जोशी जी ने यहां कार्यकाल संभाला, तब आपने उनको अच्छा समर्थन दिया।

आप लगातार दसवीं बार लोक सभा देख रहे हैं, हममें से किसी की दूसरी, किसी की तीसरी, किसी की चौथी और किसी की पहली लोक सभा है, आपका इतना अनुभव है। इतना अनुभव देखने के बाद भी हम लोग वहां से बैठकर आपका भाषण सुनते थे कि सोमनाथ जी जब भाषण करेंगे तो हम सुनेंगे। सोमनाथ जी, मैं आपको इसलिए बधाई भी दूंगा कि आप जैसे व्यक्ति के यहां बैठने के बाद में भले ही आप यू.पी.ए. गवर्नमेंट में शामिल न होने के बाद मे भी बाहर से सपोर्ट दिया है इसलिए हमें आपसे बहुत बड़ी उम्मीद है। मैं यह कहूंगा कि जैसे बालासाहेब ठाकरे जी, शिवसेना प्रमुख ने, एन.डी.ए. में होने के बावजूद भी लेबर रिफार्म यहां नहीं आने दिया था, उस समय आपने भी और दादा आपने भी उसे सपोर्ट किया था। उसी तरह मैं आपसे यहीं कहूंगा और यहीं मागूंगा कि आप भी यू.पी.ए. गवर्नमेंट में हैं। आदरणीय प्रधानमंत्री जी तो बहुत ज्ञानी हैं, वे कभी भी वह बिल ला सकते हैं, लेकिन आप उनको रोकेंगे, यह मुझे आपसे उम्मीद है। मैं आपसे यह कहूंगा कि बहुत बॉर मनोहर जोशी जी के साथ आपकी चर्चा होती थी तो हम भी उसे सुनते थे। पहले भी मावलंकर जी का यहां प्रभाव रहा है, उसके बाद यह परम्परा शुरू हो गई है, आदरणीय शिवराज जी पाटिल, संगमा जी, बालयोगी जी की जैसी परम्परा रही है, आप भी वैसी ही परम्परा चलाएंगे।

मैं शिवसेना की ओर से आपको बधाई देता हूं। आपने मुझे शपथ ग्रहण के समय कहा था कि ज्यादा गड़बड़ मत करना। माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने भी कहा था कि कुएं में कूदने की नौबत कभी न आने देना। मैं आपसे यही कहूंगा कि जैसे सारे लोगों को न्याय मिलेगा वैसे ही हमको भी आपसे न्याय मिलता रहेगा। हिन्दुत्व वाली भूमिका निभाना आपके लिए बहुत मुश्किल है लेकिन जब हम उसे रखेंगे तो आप हमें समर्थन देना, यही मैं आपसे उम्मीद करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।

[अनुवाद]

श्री बृज किशोर त्रिपाठी (पुरी) : अध्यक्ष महोदय, आपका स्वागत करना मेरे लिए अत्यंत हर्ष एवं विशेषाधिकार की बात है। इस सुअवसर पर मैं अपनी ओर से तथा अपनी पार्टी, बीजू जनता दल की ओर से आपको बधाई देता हूँ।

महोदय, विगत में सही मायने में आपको सर्वश्रेष्ठ संसद के रूप में पुरस्कृत किया गया था। आप इस समय के न केवल सर्वश्रेष्ठ सांसद हैं, बल्कि आप देश के अग्रणी विधिवेता हैं। आप सांविधानिक नियमों की व्याख्या करने में विशेषज्ञ है। इस प्रकार की व्याख्या करने में आप अत्यधिक अनुभव सम्पन्न है। संसद में सांसद तथा विधिक विशेषज्ञ के रूप में आपके पास बहुत अनुभव है। आपके पास शीर्ष न्यायालय, भारत के उच्चतम न्यायालय में कार्य करने का अनुभव है इसलिए हम इससे लाभान्वित होंगे।

एक ओर तो आपको इस सर्वोच्च पंचायत अर्थात् संसद में कानून बनाने का लाभ मिलेगा तथा दूसरी ओर आपके पास उच्चतम न्यायालय में इन्हीं कानूनों की व्याख्या करने तथा निर्णयों के कार्यान्वयन का अनुभव भी है। अतः हम, संसद सदस्यों को इस पवित्र सभा में आपकी विवेकपूर्ण राय तथा मार्गनिर्देशन प्राप्त करने का लाभ मिलेगा।

महोदय, मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है कि आपको ठीक तरीके से और सर्वसम्मति से इस सभा का अध्यक्ष चुना गया है। मुझे आशा है कि आप इस सदन की मर्यादा और गरिमा को बनाये रखेंगे और न केवल हमारे देश में अपितु विश्वभर में संसदीय लोकतंत्र को मजबूत बनायेंगे। हमें विश्वास है कि संसदीय लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए आप एक आदर्श स्थापित करेंगे।

महोदय, मुझे आशा है कि आपका व्यापक अनुभव वाला संसदीय जीवन और मानवता तथा आम आदमी के प्रति आपकी प्रतिबद्धता से निश्चित तौर पर इस सभा को देश के लोगों का कल्याण करने में सहायता मिलेगी।

मैं सभी सदस्यों की ओर से एक बार पुनः आपको शुभकामनाएं देता हूँ।

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद।

श्री पी. के. वासुदेवन नायर (तिरूअनन्तपुरम) : अध्यक्ष महोदय, खुशी के इस अवसर पर मैं अपनी पार्टी तथा अपनी ओर से आपको हार्दिक बधाई देता हूँ।

महोदय, पहले साधारणतया आपके जैसे व्यक्ति द्वारा इस संवैधानिक पद को प्राप्त करने की अपेक्षा नहीं की जाती थी। आप आज इस पद पर हैं इससे यह पता चलता है कि समय परिवर्तित हो रहा है और हमारे राजनीतिक परिदृश्य में भी बहुत परिवर्तन आ रहा है। मुझे आशा है कि और भी बड़े परिवर्तन आने वाले हैं और मेरे मत के अनुसार यह इसका संकेत है।

महोदय, इस चुनाव से पता चलता है कि इस देश में मेहनत करने वाले लाखों लोग निराश और हतोत्साहित हैं। यह सचमुच एक दुख की बात है स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आधी सदी बीत जाने के बाद भी लाखों लोग ऐसा महसूस कर रहे हैं। हमें इस बात को गंभीरता से लेना चाहिये। मुझे इस बात

की खुशी है कि ऐसे समय में एक ऐसा व्यक्ति इस पद पर आसीन है जो कि इन लाखों परिश्रमी लोगों की अपेक्षाओं को समझ सकता है।

महोदय, मैं एक बात और कहना चाहूँगा। निश्चित रूप से आपको आपके कार्य के बारे में राय देने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस पद पर आसीन होने से पहले ही आपने कहा है कि आप विपक्ष का ध्यान रखेंगे। आपने तो यहाँ तक कहा है कि विपक्ष का विशेष ध्यान रखा जाएगा।

इन दिनों देश के लोग विधायिका की आलोचना कर रहे हैं। हमारी विधायिका में कई दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं हो रही हैं। पहले हमें दोष दिया जाता था परन्तु अब यह प्रश्न नहीं है। मैंने यह महसूस किया है कि पूर्व में विपक्ष को दबाने की प्रवृति रही – चाहे यह कोई भी पार्टी हो। लेकिन आपका यह विचार कि विपक्ष की तरफ ध्यान दिया जाना चाहिये तथा उसका कुछ पक्ष भी लिया जाना चाहिये, अतः यह संसदीय लोकतंत्र की अच्छी प्रथाओं को पुनः स्थापित करने की दिशा में एक अच्छा कदम है। मैं आपकी सफलता की कामना करता हूँ।

[हिन्दी]

कृषि मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री (श्री शरद पवार) : मान्यवर, आपके ऊपर यह नई जिम्मेदारी सर्वसम्मति से पड़ी है, इसलिए मुझे आपका अभिनन्दन करने में बडी प्रसन्नता है। मैंने आपको आठवीं लोक सभा से इस सदन में देखा है और मुझे आपके साथ काम करने का मौका भी मिला – कभी इस बाजू से मिला, कभी सामने से मिला। मेरे मन में यह बात पक्की है कि जब आप यहां बोलने के लिए उठते थे तब समाज में गरीब लोगों के हितों की रक्षा आपकी आवाज में हमेशा रहती थी – चाहें किसानों की समस्या हो, मजदूरों की समस्या हो, समाज के अल्पसंख्यकों का दुख हो, इस पर आपने हमेशा सदन के सामने अपनी आवाज उठाई। कई बार सदन में संघर्ष हुए मगर आपने उस संघर्ष में भी सदन की मर्यादा रखने की कोशिश हमेशा की। मैंने आप जैसा एक ऐसा सदस्य देखा है जिन्होंने अपनी जगह कभी नहीं छोडी और हमेशा सदन की गरिमा बनाए रखने की कोशिश की। आपने जीवन में कई क्षेत्रों में काम किया। देशवासी आपको एक अच्छे लॉइयर के रूप में जानते हैं, अच्छे वक्ता के रूप में जानते हैं। देशवासियों ने कई साल एक अच्छे पार्लियामैंटेरियन को देखा है लेकिन आज एक अच्छा अध्यक्ष किस तरह सदन के सभी साथियों को साथ लेकर काम कर सकता है, इसका दर्शन आपके माध्यम से पूरे देशवासियों को होगा, ऐसा विश्वास मेरे मन में है। आप राजनीति में कई सालों से काम कर रहे हैं मगर मर्यादा बनाए रखने के बारे में आपने कभी कम्प्रोमाइज़ नहीं किया। आप राजनीति के साथ–साथ क्रीडा के क्षेत्र मे भी ध्यान देते हैं जिसका असर यहां दिखाई दे सकता है।

मुझे मालूम है कि आप वैस्ट बंगाल क्रिकेट संघ के पदाधिकारी हैं। आप वहां के टेबल टैनिस संगठन के प्रमुख हैं। आप वहां ऐथलेटिक्स क्षेत्र में काम करते हैं और मोहन बागान के भी समर्थक हैं।...*(व्यवधान)*

भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री संतोष मोहन देव) : यह रैसलिंग ऐसोसिएशन के प्रैज़ीडैंट भी हैं।...*(व्यवधान)*

श्री शरद पवार : आप रैसलिंग ऐसोसिएशन के प्रैज़ीडैंट हैं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : शायद उन्हें किसी साथी की आवश्यकता है। परन्तु मैं उनके साथ नहीं जाऊंगा।

[हिन्दी]

श्री शरद पवार : आपने अपने जीवनकाल में क्रीड़ा क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान दिया। वैसे ही आपने शिक्षा के कई क्षेत्रों में बहुत काम किया है। कई अच्छे इंस्टीटयूशन्स आपने खड़े किए, कई अच्छे इंस्टीटयूशन आपने चलाए। आज इस देश की सबसे बड़ी संसद आपके हाथ में आई है। यहां माननीय सदस्यों की अलग–अलग विचारधाराएं हैं। इन सब अलग विचारधाराओं को लेकर सरकार चलाने की जिम्मेदारी आज के प्रधानमंत्री के ऊपर है और यह काम इतना आसान नहीं है। लेकिन मुझे विश्वास है कि अध्यक्ष की जिम्मेदारी स्वीकार करने के बाद इस सदन को ठीक तरह चलाने में, आपका अनुभव सदन के दोनो वर्गों को संतुष्ट रखने में, अच्छी मदद करेगा।

मुझे लगता है कि आपका यह कार्यकाल सफल सिद्ध होगा। मेरी पार्टी की तरफ से और हमारे सदस्यों की तरफ से आपको हमेशा हम लोगों द्वारा पूरे दिल से सहयोग मिलेगा। इतना ही कहकर मैं फिर आपकी प्रशंसा करता हूं।

श्री नीतीश कुमार (नालन्दा) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी पार्टी की तरफ से और अपनी तरफ से आपके निर्विरोध निर्वाचन पर आपको बधाई देना चाहता हूं। सब लोगों का आपको समर्थन मिला है और मिलना भी चाहिए था। आप सर्वश्रेष्ठ सांसद के खिताब से भी नवाजे जा चुके हैं। एक सर्वश्रेष्ठ सांसद अगर अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठता है तो इससे बेहतर और कोई बात नहीं हो सकती है। मैं इस अवसर पर आप जिस दल से चुनकर आए हैं, उस दल सीपीआईएम को भी मैं धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने आपको इस पद को ग्रहण करने की इजाजत दी। आम तौर पर आपकी पार्टी लोगों को इजाजत

नहीं देती। लेकिन उन्होंने आपको इजाजत दी और इस पद पर पहुंचे। यह इस सदन का सौभाग्य है और थोड़ा–बहुत सौभाग्य श्री बसुदेव आचार्य जी का भी है कि आप जब वहां चले गये तो नेता के पद पर आसीन हो गये लेकिन मुझे पूरी उम्मीद है कि श्री बसुदेव बाबू पर भी आपका पूरा अंकुश रहेगा। मैं अपनी तरफ से आपको आश्वस्त करना चाहता हूं कि हम आपकी परम्परा का निर्वहन करेंगे। विपक्ष में रहते हुए आपने जो कुछ भी किया, हम वैसे ही करना चाहेंगे और उसी प्रकार करेंगे। मुझे पूरी उम्मीद है कि जिस तरह से विपक्ष में रहते हुए आपने सवाल उठाए और अवसर प्राप्त किया, मुझे ऐसा लगता है कि जिस प्रकार से आसन से जब भी आपने चाहा, आपको अवसर मिला, उसी प्रकार की उदारता आप हम लोगों के प्रति भी प्रदर्शित करेंगे। यह हमारी आपसे अपेक्षा होगी और मैं आपको पूरे सहयोग और समर्थन का वचन देता हूं और इन्हीं शब्दों के साथ इस उच्च पद के ग्रहण करने पर आपको धन्यवाद देता हूं।

श्री सुखदेव सिंह ढींडसा (संगरूर) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके निर्विरोध स्पीकर चुने जाने पर अपनी पार्टी की ओर से और अपनी ओर से आपको बधाई देते हुए खुशी महसूस कर रहा हूं। आपका इतना लम्बा पार्लियामेंटेरियन का जीवन और वह भी आपका बैस्ट पार्लियामेंटेरियन का खिताब पाना और इस कुर्सी पर विराजमान होना यह देश के लिए भी और इस कुर्सी के लिए भी बड़े मान की बात है। मैं भी गर्व महसूस करता हूं क्योंकि आप इस लम्बे समय में अपोजीशन में ही रहे। आज आपकी पार्टी अपोजीशन में भी नहीं है और सरकार में भी नहीं है। इसलिए आप जानते हैं कि अपोजीशन में और खासकर जो छोटी पार्टीज हैं, रीजनल पार्टीज हैं, आप उनका ध्यान रखेंगे, उनके लिए टाइम देंगे और उनकी रक्षा करेंगे। मुझे उम्मीद है कि वह आप करेंगे और इसलिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूं।

1984 के रॉयट्स में आपकी पार्टी की सरकार पश्चिम बंगाल में थी। वह एक ऐसी जगह थी जब हिन्दुस्तान के अनेक हिस्सों में सिखों के साथ जो कुछ हो रहा था लेकिन आपकी पार्टी की सरकार ने वहां पर एक पत्ता नहीं हिलने नहीं दिया। उस वक्त आपका सबसे बड़ा रोल था और उसके लिए सिख आपके आभारी रहेंगे। इसलिए आपका रोल वहां भी, यहां माइनॉरिटीज के लिए भी और छोटी पार्टी के लिए भी आप यह करते रहेंगे। मैं बहुत कुछ न कहते हुए आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मेरी पार्टी आपको पूरा सहयोग देगी और जैसे भी आप अच्छे तरीके से हाउस चलाएंगे, उसमें हम पूरा सहयोग और समर्थन देंगे। इतना कहकर मैं एक बार फिर आपको बधाई देता हूं।

[अनुवाद]

प्रो. एम. रामदास (पांडिचेरी) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तमिलनाडु की पट्टाली मक्कल काची पार्टी का प्रतिनिधित्व करता हूँ और इसे आपके लोकसभाध्यक्ष चुने जाने के इस ऐतिहासिक अवसर पर आपको बधाई देने में गर्व और प्रसन्नता है। हमारी पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष डा. रामदास अय्या जो कि तमिलनाडु में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन तथा वहाँ के श्रमिक समुदाय की भारी जीत के शिल्पकारों में से एक हैं तथा जिनकी भावनाओं का प्रतिनिधित्व इस सभा में पी.एम.के. पार्टी कर रही है, वह भी आपके इस पद पर आसीन होने के अवसर पर आपका सम्मान किये जाने में मेरे साथ सम्मिलित हैं।

महोदय, मैं श्रीमती सोनिया गांधी को भी बधाई देना चाहूँगा जो कि इस सभा में विभिन्न विचारधारा वाले दलों द्वारा आपको सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने के लिए आम सहमति बनाने में सहायक रही है। सर्वसम्मति से आपको लोक सभा अध्यक्ष चुने जाने का प्रयत्न केवल यहाँ उपस्थित माननीय सदस्यों को ही नहीं अपितु उनके माध्यम से देश के लोगों ने भी आपको लोकसभा का अध्यक्ष चुना है। यहां तक कि वर्ष 1952 में लोकसभा के पहले अध्यक्ष श्री जी.वी. मावलंकर भी चुनाव लड़कर अध्यक्ष बने थे। लेकिन आज आपके चुनाव के लिए श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा अपनाया गया सर्व सहमति का यह दृष्टिकोण इस लोकसभा के लिए एक शुभ संकेत है, और मुझे आशा है कि निकट भविष्य में हम लोगों द्वारा अपनाई जाने वाली स्वस्थ राजनीतिक परम्परा की शुरूआत है। लोकतंत्र की इस सर्वोच्च परम्परा की स्थापना के लिए पट्टाली मक्कल काची पार्टी श्रीमती सोनिया गांधी को हार्दिक बधाई देती है।

महोदय, मेरा मानना है कि लोक सभा अध्यक्ष पद पर आपके सर्वसम्मत चुनाव की प्रणेता के रूप में श्रीमती सोनिया गांधी ने लोकसभाध्यक्ष के निर्वाचन के बारे में परिपाटी संबंधी सुझाव देने के लिए 1967 में गठित पेज समिति की दो मुख्य सिफारिशों का पालन किया है। पेज समिति की दो सिफारिशों में एक सिफारिश यह थी कि सत्तापक्ष को लोकसभाध्यक्ष के संबंध में सर्वसम्मति बनानी चाहिये। इस मामले में सत्तापक्ष (कांग्रेस) ने पिछले पखवाड़े के दौरान सर्वसम्मति बनाने का प्रयास किया और वह इसमें सफल भी हुआ। दूसरी सिफारिश यह थी कि इस पद के लिए मनोनीत व्यक्ति सभा का वरिष्ठ सदस्य हो और वह सदन के नेता के समान प्रतिष्ठित हो, महोदय, आपके चुनाव में यह दोनों शर्तें पूरी हुई हैं, और मुझे आशा है कि आपको सर्वसम्मति से लोकसभाध्यक्ष चुने जाने पर इस देश के लोगों को प्रसन्नता होनी चाहिये। इस सभा में आपके दीर्घ अनुभव को देखते हुए हमें आशा है कि हम सभा की कार्यवाही को शालीनता और गरिमामय ढंग से चला पायेंगे।

महोदय, दो–तीन दिन पहले आपने प्रैस के समक्ष कहा था कि आप पर्याप्त अवसर प्रदान करके विपक्ष के हितों का ध्यान रखने की कोशिश करेंगे। तथा ऐसा ही ध्यान हमारे जैसे दलों का भी रखा जाना चाहिए। जिनकी सभा में सदस्य संख्या अधिक नहीं है। परन्तु जो लोकसभा के सामने आने वाले महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपने विचारों से काफी योगदान कर सकते हैं। अतः महोदय, मेरी आपसे अपील है कि आप हमें अपने विचार रखने के लिए पर्याप्त अवसर दे सकें। महोदय, मैं अरविन्द तथा भारती दासन की भूमि पांडिचेरी से आता हूँ। अतः वहां के लोग भी आपका अभिनंदन करने में मेरे साथ हैं। मुझे आशा है कि लोकसभाध्यक्ष के रूप में आपके कार्यकाल के दौरान संसद परिवर्तन के साधन के रूप में देखी जाए। अपने अभिनंदन भाषण में हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा है कि राजनीति परिवर्तन का साधन बन रही है। लोकसभा में हमारे द्वारा किये जाने वाले कार्य के माध्यम से इस राजनीति को यथार्थ रूप दिया जाना चाहिये। अतएव आप इस देश के लोगों के संरक्षक हैं। इस देश के 103 करोड़ लोगों को आपसे बड़ी अपेक्षाएं हैं। मुझे आशा है कि भारत के लोगों की शुभकामनाओं से आप प्रभावी और सक्षम सेवा कर सकेंगे।

निर्विभाग मंत्री (श्री के. चन्द्रशेखर राव) : महोदय सर्वसम्मति से इस पवित्र सभा का अध्यक्ष चुने जाने पर मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूं। वास्तव में यह इस सभा का सौभाग्य है कि आप जैसा वरिष्ठ संसद सदस्य इसका अध्यक्ष चुना गया है। आप देश के सवोत्तम सांसदों में से एक हैं और देश का हर व्यक्ति आपका सम्मान करता है। आपका दीर्घ और व्यापक अनुभव इस सभा के पुराने और नये चुने गये सदस्यों तथा देश की महत्वाकांक्षी जनता के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

मैं अपनी ओर से तथा अपनी पार्टी तेलंगाना राष्ट्रीय समिति के सदस्यों की ओर से आपकी सफलता की कामना करता हूँ।

महोदय, मैं सदन की गरिमा और मर्यादा बनाये रखने में पूरा सहयोग देने का आश्वासन देता हूँ।

डा. एम. जगन्नाथ (नगरकुरनूल) : महोदय, मैं तेलुगूदेशम् संसदीय पार्टी की ओर से तथा अपनी ओर से सर्वसम्मति से चौदहवीं लोकसभा का अध्यक्ष चुने जाने पर आपको हार्दिक बधाई देता हूं।

महोदय, पहले कम्युनिस्ट नेता के रूप में लोकसभा अध्यक्ष के महत्वपूर्ण पद पर आसीन होकर आपने एक इतिहास रचा है। वास्तव में आपके सम्मान में यही बात सबसे अच्छी हो सकती थी क्योंकि आप लोकसभा के लिए दस बार चुने गये हैं और इनमें से भी अधिकतर बार आप प्रसिद्ध संसदीय निर्वाचन क्षेत्र बोलपुर से चुने गये हैं जो विश्व भारती विश्वविद्यालय के लिए विख्यात है।

मैं आपका एक ऐसे वरिष्ठ सदस्य के रूप में भी स्वागत करता हूं जिसने सभा में सभा के नेता के समान ही सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त की है। आप एक ऐसे दबंग वक्ता हैं जो अपनी हाज़िर जवाबी और चुटीली शैली के लिए जाने जाते हैं और आपको वर्ष 1996 के उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। महोदय, आपके अध्यक्ष पद पर विराजमान होने से हम सभा में आपकी वक्तृता से वंचित हो जायेंगे और यह हमारे लिए एक तरह से नुकसान की बात होगी लेकिन हम सभा के सुचारू संचालन में आपके मार्गदर्शन से लाभान्वित भी होंगे। मुझे पता नहीं कि हममें से कितने लोग यह जानते हैं कि आप एक सुप्रसिद्ध बैरिस्टर हैं और विभिन्न शैक्षणिक, सांस्कृतिक तथा भारतीय विधि संस्थान, अंतर्राष्ट्रीय विधि संगठन जैसे पेशेवर संस्थानों से सक्रिय रूप से संबद्ध रहे हैं। महोदय, आप कई ऐसे श्रमिक संगठनों से भी संबद्ध रहे हैं जो श्रमिक वर्ग की सहायता कर रहे हैं।

आप संसद में तीन दशकों से भी अधिक समय से हैं और आपने एक ऐसे व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त की है जो अपना कार्य बहुत ही मनोयोग से करता है और जो अपने राजनीतिक प्रतिद्वंदियों से निपटने में शिष्टाचार और गरिमा को बनाये रखता है। लोकसभा अध्यक्ष के रूप में कार्य करने के लिए आपमें निपुणता, धैर्य और इस सबसे बढ़कर निष्पक्षता की आवश्यकता होगी।

मैं अपनी ओर से और तेलुगू देशम संसदीय दल की ओर से सभा के सुचारु संचालन में सहयोग का आश्वासन देता हूं। मैं आशा करता हूं कि कई दशकों तक विपक्ष में रहने के बाद, आप इस बात में उदारता दर्शायेंगे कि सभा में चर्चाधीन विभिन्न मामलों पर विपक्षी सदस्यों को अपने विचार व्यक्त करने के लिए अधिकाधिक समय मिले।

अंत में, अध्यक्ष के रूप में आपको बधाई देने के साथ–साथ मैं एक बार फिर से अपनी ओर से और तेलुगू देशम संसदीय दल की ओर से शुभकामनाएं देता हूँ।

[हिन्दी]

रसायन और उर्वरक मंत्री तथा इस्पात मंत्री (श्री रामविलास पासवान) : अध्यक्ष जी, सर्वप्रथम मैं आपको सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने पर अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से बधाई देता हूं। हम लोगों का संबंध बहुत पुराना रहा है

सन् 1977 से हम लोग साथ–साथ बैठे हैं। जिस समय आपका नाम अध्यक्ष पद के लिए आ रहा था तो खुशी के साथ–साथ हमारे मन में मायूसी भी थी। जब मैं सन् 1977 में नया–नया आया था उस समय आपको 6–7 साल का अनुभव था और आपको यहां के कामकाज की बहुत जानकारी थी। उससे हम लोग बहुत प्रभावित भी रहे और ऐसा कोई भी औकेजन नहीं आया जब हमने आपसे सहायता न ली हो। लेकिन आज नये सदस्यों को यह कमी जरूर खलेगी।

वे आपके उस मार्गदर्शन से अछूते रहेंगे। आप जिस पद पर गए हैं, वह पार्लियामैंट एक सर्वोच्च संस्था है। उसमें स्पीकर सबसे प्रमुख होता है – चाहे सत्ता पक्ष के सदस्य हों या विपक्ष के हों, सारे के सारे लोग आपके अधीन काम करते हैं। आपने अनुभव से साबित किया है, नेता बहुत होते हैं लेकिन नेता की जो सबसे बड़ी खूबी होनी चाहिए, उसमें नेता के पास दिमाग से ज्यादा दिल की आवश्यकता होती है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि आपके पास दिल भी है और दिमाग भी है। आपका लम्बा अनुभव रहा है। अभी प्रणव जी लीडर ऑफ दी हाउस की हैसियत से कह रहे थे कि आर्थिक मुद्दों के ऊपर संसद में अधिक से अधिक डिबेट होनी चाहिए। मैं उनकी बात से सौ फीसदी सहमत हूं। आप माननीय सदस्यों की भावनाओं को समझते हैं। देश में 85 फीसदी लोग जो दलित हैं, आदिवासी हैं, पिछड़े वर्ग के लोग हैं, अक्लियत के हैं, ऊंची जाति में गरीब लोग हैं, उनको आजादी के इतने साल गुजर जाने के बाद भी राष्ट्र की मुख्य धारा में जुड़ने का मौका नहीं मिला। इसलिए उनकी समस्याएं बहुत जटिल हैं। माननीय संसद सदस्य चाहें इस पक्ष के हों या उस पक्ष के हों, उनके मन में हमेशा उनकी समस्याओं के संबंध में डिसकशन करवाने की भावना रहती है। वे सरकार की तरफ से कुछ जानने का प्रयास करते हैं। मैं समझता हूं कि आपका उनकी तरफ विशेष ध्यान रहेगा। हम को यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि भारत एक बगीचा है और उसमें हर तरह के फूल हैं। यहां हिन्दू भी हैं, मुसलमान भी हैं, दलित भी हैं, पिछड़े वर्ग के लोग भी हैं, अगड़ी जाति के लोग भी हैं। बगीचे का वही माली अच्छा होता है जिस में हर तरह के फूल खिलते हैं। आप बगीचे के माली के रूप में हैं। यहां हर फूल को अपने विचार रखने का मौका मिलेगा और उन्हें खिलने का मौका दिया जाएगा।

अंत में, मैं एक ही बात कहना चाहता हूं कि हमने एक बार कहा था कि सारे के सारे राम इधर हैं – चाहे रामविलास हो, कांशीराम हो या जगजीवन राम हो या रामदास हो या रामचन्द्र हो, लेकिन आज सोमनाथ गद्दी पर बैठे हैं। हम को लगता है कि आज भारत के इतिहास में सही मामले में सोमनाथ यात्रा शुरू हुई है जो देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाने की कोशिश करेगी। बहुत–बहुत धन्यवाद। मैं एक बार फिर आपको बधाई देता हूं।

[अनुवाद]

श्री पी. ए. संगमा (तुरा) : अध्यक्ष महोदय सात वर्ष पहले 19 मार्च, 1997 को मुझे, आपको वर्ष 1996 के लिए 'उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार' से सम्मानित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस समय मैंने आपके बारे में एक बात कही थी। मैं उसे यहां उद्धृत करता हूं:

"अंतरतम से मैंने श्री सोमनाथ चटर्जी को सदैव अपना गुरू माना है।"

महोदय, आज इस अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मत निर्वाचन के बाद वास्तव में आप हम सबके महागुरू हो गये हैं।

मुझे आपके साथ भारत में तथा विदेश यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैंने अपने मित्रों से कई बार यह बात कही है कि सोमनाथ चटर्जी का सनिध्य अपने आप में एक अनुभव तो है ही, साथ ही इससे व्यक्ति का ज्ञानवर्धन और बौद्धिक विकास भी होता है। मुझे अब भी याद है कि बीजिंग के आई पी ओ सम्मेलन में आपने भारतीय संसद के प्रतिनिधि के रूप में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी और जहां आपको निर्विरोध सम्मेलन का संवक्ता चुना गया था।

आज, वास्तव में मैं अपने गुरू को इस पद पर आसीन देखकर बहुत ही प्रफुल्लित हूं। मैं आपके मंगल की कामना करता हूं। मैं आपके कार्यकाल की सफलता की कामना करता हूं और हार्दिक बधाई देता हूं।

महोदय, ईश्वर आप पर अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखें।

अध्यक्ष महोदय : आपका बहुत–बहुत धन्यवाद। अब श्री बीर सिंह महतो।

श्री बीर सिंह महतो (पुरूलिया) : महोदय, मैं यहां माननीय प्रधानमंत्री, विपक्षी के नेता तथा इस सभा के दूसरे नेताओं द्वारा व्यक्त किये गये विचारों से सहमत हूं।

महोदय, यह अपने आप में एक विशिष्ट अवसर है कि इस सभा के सभी दलों ने आपको सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया है....*(व्यवधान)* सभा के लिए यह विशेष सौभाग्य की बात है कि हमारे अध्यक्ष महोदय को तीन दशकों से भी अधिक समय का संसदीय अनुभव प्राप्त है। वह एक अच्छे वक्ता होने के साथ–साथ उत्कृष्ट सांसद भी हैं। वह एक अच्छे अधिवक्ता भी हैं। वामपंथी दलों के लिए और हमारे लिए यह एक विशेष

प्रसन्नता का दिन है क्योंकि वामपंथी समूहों से आने वाले आप पहले लोकसभा अध्यक्ष हैं। इसलिए मैं अपनी पार्टी की ओर से और वामपंथी समूहों की ओर से आपको बधाई देता हूँ।

[हिन्दी]

श्री जोवाकिम बखला (अलीपुरद्वार) : अध्यक्ष महोदय, जिस तरह से लोक सभा के अध्यक्ष पद के लिये आपका चयन हुआ है, उसके लिये मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की आर.एस.पी. की ओर से बधाई और शुभकामनायें ज्ञापित करना चाहता हूँ। आपने तो इस औगस्ट हाउस में एक लम्बी पारी खेली है और इस हाउस में आपका एक महान् व्यक्तित्व है। आप में प्रतिभा कूट–कूटकर भरी हुई है लेकिन जिस पद को आपने सुशोभित किया है, उस पद के सुशोभित होने पर हमें काफी गर्व है और हमें काफी खुशी हो रही है। मैं आपको बता देना चाहता हूं कि जिस कुर्सी पर आज आप विराजमान हैं, उस कुर्सी पर बैठने की योग्यता आप में है। आपको बहुत पहले ही इस आसन पर पहुंचना चाहिये था लेकिन देर सही, अंधेर नहीं है। हमें खुशी है कि आपकी योग्यता के अनुसार आपको यह पद मिला है। कल तक तो बुनियादी समस्याओं को लेकर आपकी भूमिका अलग थी और 13वीं लोकसभा तक आपको एक अलग भूमिका का पालन करने की आवश्यकता पड़ी। पिछड़े वर्ग एवं गरीब तबके के लोगों की समस्याओं को लेकर आपने चर्चाओं में हिस्सा लिया और उन चर्चाओं को आपने एक रचनात्मक रूप देने का काम किया। इन कामों में आपको सफलता अवश्य मिली लेकिन आज आपको एक अलग ही भूमिका के पालन करने की आवश्यकता है। आप एक अलग कर्तव्य का निर्वहन करने के लिये तैयार हैं। मुझे तथा मेरी पार्टी को पूरा विश्वास है कि आप इस चुनौती को स्वीकार कर रहे हैं और इस चुनौती को स्वीकार करते हुये हमारे इस औगस्ट हाउस में हम लोगों को मार्गदर्शन देने में आपको अवश्य सफलता मिलेगी। मेरा एवं हमारी पार्टी का आपको पूर्ण सहयोग उपलब्ध होगा।

अध्यक्ष महोदय, आज हमारे देश में एक अलग से संदेश जा रहा है कि इस सदन की मर्यादा बरकरार रखने का काम आज आपको दिया जा रहा है। इसलिये हिन्दुस्तान के लोग गर्व से आपकी और ताके हुये हैं ताकि आज के बाद जिन विषयों पर, विशेषकर गरीब, बेरोजगार, युवा वर्ग और जिन–जिन बुनियादी समस्याओं को लेकर हम लोग यहां बहस में हिस्सा लेते हैं, उन चर्चाओं को और भी अच्छा रचनात्मक रूप देने में आप सफल होंगे। हमें पूरी आशा है कि प्रतिपक्ष से लेकर सत्ता पक्ष तक आपको सब का समर्थन मिल रहा है।

आखिर में मैं कहना चाहता हूँ कि हमारी शुभकामनाएं आपके साथ रहेंगी, हमारा आपको पूरा सहयोग मिलेगा। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहे, ताकि आप योग्यता के शिखर पर चढ़ते जायें। इतना कहकर मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

[अनुवाद]

डा. अरूण कुमार शर्मा (लखीमपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सभा के अध्यक्ष पद पर आपके सर्वसम्मत चुनाव के लिए मैं अपनी पार्टी असम गण परिषद की ओर से अपनी पार्टी के प्रेसीडेंट श्री वृंदावन गोस्वामी की ओर से और मैं अपनी ओर से आपको बधाई देता हूँ और आपका अभिनन्दन करता हूँ।

महोदय, इस अवसर पर मैं असम के लोगों की ओर से भी विशेष भावनाएं व्यक्त करना चाहता हूँ। क्योंकि आप असम के तेजपुर में पैदा हुए थे इसलिए मैं असम के लोगों की ओर से आपको विशेषरूप से बधाई देना चाहता हूँ।

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद।

डा. अरूण कुमार शर्मा : महोदय, आपके व्यापक अनुभव और संसदीय प्रक्रियाओं से लम्बे समय से जुड़े रहने को ध्यान में रखते हुए, मुझे पूरा विश्वास है कि यह सभा इस से लाभान्वित होगी और राष्ट्र के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान कर सकेगी। आप कानूनी पेशे से भी जुडे रहे हैं, इसलिए मैं आशा करता हूँ कि आपकी तटस्थता, विवेकपूर्ण निर्णय और तार्किक निष्कर्षों से इस सभा के सभी वर्ग और राजनीतिक दल संतुष्ट रहेंगे, विशेषकर छोटे–छोटे दल जिन्हें अपने विचार व्यक्त करने के लिए आपके संरक्षकत्व में यथोचित अवसर प्राप्त हो सकेंगे।

महोदय, मैं इतना पुराना सदस्य नहीं हूँ कि स्वयं को लोक सभा में ससंदीय कार्यवाहियों से पूरी तरह से भिज्ञ बता सकूं। मुझे 11वीं लोकसभा में केवल 18 महीने का अनुभव है। उस अनुभव से मैं महसूस करता हूँ कि हम यहां अधिकतर समय बड़े राजनीतिक दलों द्वारा एक दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप लगाने में बर्बाद कर देते हैं। किसी ऐसे गंभीर मुद्दे पर गंभीर चर्चा शायद ही कभी होती हो। जिसके माध्यम से हम देश का कुछ भला कर सकें। मैं आशा करता हूँ कि आप अपनी दक्षता और राजनीतिक कौशल से सभा में इस तरह के होने वाले निरर्थक वाद–विवाद में कमी ला सकेंगे।

अंत में, मैं अपनी पार्टी की ओर से और अपनी और से पूरे सहयोग का आश्वासन देता हूँ और आपके कार्यकाल की सफलता की कामना करता हूँ।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, मैं आशा करता हूँ कि

आप मुझे भी अपनी बात कहने के लिए थोड़ा समय देंगे। अब दिन का एक बजने वाला है। लेकिन अब मैं कुछ दूसरे माननीय सदस्यों को आमंत्रित करूंगा। जिन्होंने अनुरोध सहित अपने नाम मेरे पास भेजे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि वे इस बात को समझेंगे कि संक्षेप में अपनी बात कहना बुद्धिमत्तापूर्ण होता है।

[हिन्दी]

सुश्री महबूबा मुफ्ती (अनंतनाग) : ऑनरेबल स्पीकर सर, मैं अपनी पार्टी पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की तरफ से आपको मुबारकबाद देना चाहती हूँ और साथ ही मैं यह कहने में नहीं हिचकूंगी कि मेरे जैसे मैम्बर जो पहली बार इस संसद में आये हैं, हम यह सोचकर आये थे कि हमें डिबेट में आपसे कुछ सीखने को मिलेगा।

[अनुवाद]

हम आपसे यह सीखना चाहते थे कि आप उन मुद्दों पर इतने निरपेक्ष भाव से कैसे चर्चा कर लेते हैं। जो आपको बहुत प्रिय है और इनमें इतना नाजुक संतुलन कैसे रख पाते हैं। क्योंकि मैं ऐसा करने में पूरी तरह असमर्थ हूँ। हो सकता है मेरे राज्य में असामान्य स्थिति होने के कारण ऐसा हो या हो सकता है मेरे राज्य के लोगों द्वारा उठायी जा रही मुसीबतों और संकटों के कारण ऐसा हो।

[हिन्दी]

यहां बहुत से राज्यों से लोग चुनकर आये हैं, उनकी भी अपनी प्रॉबलम्स हैं। लेकिन मैं आपसे रिक्वैस्ट करूंगी कि आपको डिस्टिंग्विश करना पड़ेगा कि जम्मू–कश्मीर से जो हम लोग चुनकर आये हैं, हमारी सिचुएशन डिफरैन्ट है। हमें यहां तक पहुंचाने में कई मासूम जानें गई हैं। सिक्युरिटी फोर्सेज और पुलिस के अलावा कई इन्नोसैन्ट लोग, जिनमें छोटे–छोटे बच्चे, खास तौर से हमारी कांस्टीटुएंसी में दो, ढाई और तीन साल के बच्चे भी मारे गये और इस वक्त भी उनमें से कई जख्मी हैं। उसके बावजूद वहां के लोगों ने हमें वोट दिया, जानें दी, हमें एक एहतमाद दिया। मैं उम्मीद करती हूँ कि हमारे नम्बर को आप नहीं देखेंगे। नम्बर के हिसाब से हमारे पास कुछ नहीं है, हम बहुत कम हैं। मैं आपसे एक्सपैक्ट करूंगी कि आप हमें मौका देंगे कि हम उन लोगों के जख्मों पर कुछ मरहम रख सकें, उनकी कुछ बात हम यहां हाउस में कर सकें। हमारी स्टेट जम्मू–कश्मीर और लद्दाख एक मिनी इंडिया के समान है। हमारे व्यूज डाइवर्जेन्ट हो सकते हैं, लेकिन हमारी उम्मीदें हमारे मकसद एक हैं।

[अनुवाद]

हम अपने राज्य में शांति और समृद्धि लाना चाहते हैं।

[हिन्दी]

मैं आशा करती हूँ कि आप हमें यहां अपनी बात रखने का पूरा मौका देंगे। हम यह उम्मीद भी करते हैं कि हाउस के अंदर ही नहीं बल्कि हाउस के बाहर भी आपसे बात करने का हमें मौका मिलेगा, जिससे कि आप हमारे महत्वपूर्ण मुद्दों पर मार्ग–दर्शन कर सकें। आपका धन्यवाद।

श्री रामदास बंडु आठवले (पंढरपुर) : अध्यक्ष जी, हमें बहुत गर्व है कि आप अध्यक्ष बने हैं। आप बड़े व्यक्तित्व के धनी हैं। मैं यहां पांच साल, पांच महीने और तीन दिन तक 12वीं, 13वीं, और 14वीं लोक सभा के सदस्य के रूप में रहा हूँ। आपको सभी लोगों ने समर्थन दिया है और आपको सपोर्ट देकर अपोजीशन ने लोकतंत्र की एक अच्छी परम्परा कायम की है। अगर अपोजीशन वाले अपनी सपोर्ट नही देते, तो भी हम आपको चुनते, लेकिन लोकतंत्र में अगर अपोजीशन का सहयोग भी मिल जाए, तो अच्छा रहता है।

महोदय, मैंने पहले ही बोला था कि देश में इस चुनाव के बाद आपको वहां जाना होगा लेकिन ये बोल रहे थे कि हम तो वहीं रहेंगे, परन्तु ऐसा नहीं हुआ और ये वहां चले गए और हम यहां आ गए। यहां हमारे बहुत से मंत्री हैं। इसलिए यदि मैं मंत्री के रूप में नहीं हूँ तो उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं भी एक दिन तो मंत्री बनने वाला हूं।

महोदय, आपका जो व्यक्तित्व है, वह हमारे लिए बहुत बड़ी बात है। जो दलित समाज है, उसके रिजर्वेशन हेतु हमने नौवें शेडयूल में संशोधन करने की मांग की है। महिलाओं को रिजर्वेशन देने के बारे में भी प्रस्ताव आया है। महिलाओं को 33 प्रतिशत रिजर्वेशन देने, मायनॉरिटी, एस. सी., एस.टी. और ओ. बी.सी. की महिलाओं को रिजर्वेशन देने में अब कोई प्रॉब्लम नहीं आएगी। हमारी छोटी पार्टी है। हमें पता नहीं हमारी पार्टी कब बड़ी बनेगी, लेकिन हमारी पार्टी गरीब लोगों के लिए काम करने वाली पार्टी है और बाबा साहेब अम्बेडकर के सिद्धांतों के अनुरूप सोश्यल जस्टिस सोश्यल एवं इकनौमिक पैरिटी की बात, इंडियन कांस्टीटयूशन की बात पर चर्चा होती रहेगी, हम उसमें भाग लेते रहेंगे और अब खाली चर्चा की बात नहीं है बल्कि उसे इम्पलीमेंट करने के लिए यहां सोनिया जी हैं, मनमोहन सिंह जी हैं, पवार साहब हैं, शिवराज जी हैं और सभी लोग हैं। हालांकि मैं इधर नहीं हूं, परन्तु सभी लोग हैं। हमारा मंत्रिमंडल अच्छा काम करता रहेगा। आपको इस हाउस का कोआपरेशन मिलता रहेगा। आपको इस हाउस का कोआपरेशन मिलना भी चाहिए।

महोदय, जब आप उधर बैठते थे, तो मैं हमेशा आपके पीछे बैठता था। जब भी एन.डी.ए. सरकार के खिलाफ कभी आदेश देते थे, तो मैं वैल में जाता था, लेकिन अब एक बहुत अच्छी और बड़ी बात हो गई है कि आप अध्यक्ष कुर्सी पर चले गए हैं। इसलिए अब आप मुझे वैल में जाने का आदेश नहीं दे सकते हैं आप मुझे वैल में जाने का आदेश नहीं भी देंगे, तो मैं कभी–कभी किसी न किसी ऐसे विषय पर जो गरीबों के हितों के खिलाफ होगा, वैल में आने की कोशिश करूंगा, लेकिन ज्यादा नहीं आऊंगा, क्योंकि सरकार हमारी है। युनाइटेड प्रोगेसिव एलाइंस की सरकार है। यह सरकार पूरे पांच साल चलने वाली है। आपकी पार्टी को जनता ने वहां जाने का आदेश दिया है। इसलिए आप विपक्ष में बैठे हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि भविष्य में आप इधर आने की कोशिश करें। यदि आप इधर आ जाएंगे, तो भी हमें पांच साल से पहले हटाने वाला कोई नहीं है। आपके ध्यान में आ गया है कि जनता क्या चीज है और वोटर क्या चीज है। आपने फीलगुड का नारा दिया और सारा फील गुड यहां आ गया।

महोदय, मैं आपको अपनी ओर से और अपनी रिपब्लिकन पार्टी आफ इंडिया की और से, बाबा साहेब अम्बेडकर की पार्टी की ओर से हार्दिक बधाई देता हूँ और इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपका स्वागत करते हुए अपना स्थान ग्रहण करता हूँ।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आपका धन्यवाद। पिछली गलत आदतें छोड़ दें।

अपराह्न 1.00 बजे

[हिन्दी]

श्री चन्द्रशेखर (बलिया, उ. प्र.) : अध्यक्ष महोदय, मैं सबसे पहले आपको सर्वसम्मति से चुने जाने के लिए बधाई देता हूँ और विशेष रूप से इस बात के लिए बधाई देता हूँ कि आपने इस पद को स्वीकार किया। इससे न केवल इस सदन की महत्ता बढ़ी है, बल्कि जनतंत्र की भी महत्ता बढ़ी है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ जब आप सदस्य के रूप में यहां पर बैठे हुए थे तब मैंने जो कुछ भी संसद में कहा, उसमें अधिकांश समय केवल आपकी प्रेरणा रही। आपने जब कहा कि इस विषय पर मैं बोलूं, तभी मैं बोला। मैं समझता हूँ कि वह प्रेरणा देने वाला अब मेरे लिए कोई नहीं रहा, इसलिए आज भी मैं मौन ही रहना चाहता था। आज भी आप ही से मुझे प्रेरणा मिली, यह मेरा सौभाग्य है। मैं ऐसा मानता हूँ कि आपने हर समय शोषित, पीड़ित और उपेक्षित लोगों की बात की।

महोदय, मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि संसद में पिछले कुछ वर्षों में इन लोगों की आवाज अनसुनी कर दी गई। मैं समझता हूं कि आपके आ जाने से इनकी आवाज फिर से लोग सुनेंगे। यहां फिर से इनकी आवाज लोग उठाएंगे, क्योंकि अगर आवाज को अनसुना किया गया तो संसदीय जनतंत्र को जिन्दा रखना संभव नहीं होगा।

महोदय, यह सही है कि आपने एक मर्यादा का पालन किया, लेकिन नीतीश जी की बात सुनकर मुझे कुछ परेशानी हुई और मुझे ऐसा लगा कि उसका जिक्र करना मेरे लिए आवश्यक है, कभी संगत का दोष भी होता है। मैंने हर समय आपकी बात मानी, सिवाएं इसके कि सदन के बाहर जाने की, किसी मंत्री का बहिष्कार करने की, इस सलाह को मैं स्वीकार नहीं कर सका। अगर नीतीश जी यही काम करने वाले हैं तो मैं आपसे निवेदन करूंगा कि इसकी इजाजत इनको मत दीजिएगा। मैं नीतीश जी से निवेदन करूंगा कि इस बात को भूल जाएं, संसद मंत्रिमंडल का बहिष्कार करने के लिए नहीं है, जो चुने जाते हैं, जिन्हें प्रधानमंत्री चुनते हैं उनका सम्मान करना सारी संसद का कर्तव्य होता है।...*(व्यवधान)*

श्री हरिन पाठक (अहमदाबाद) : जार्ज साहब का दो साल तक वाक–आउट किया गया।...*(व्यवधान)*

श्री चन्द्रशेखर : जो किया, मैंने नहीं किया...*(व्यवधान)* आप मुझ से यह जवाब पूछ रहे हैं। पाठक जी, इतने अंजान हैं, मुझे मालूम नहीं था, मैंने कभी नहीं किया है। इतने वर्षों में संसद की किसी परम्परा की मैंने अवहेलना नहीं की है। मैं 42 वर्ष पहले संसद में आया था, इतने वर्षों में मैंने एक बार भी वाक–आउट किया हो, किसी आज्ञा का पालन नहीं किया हो, ऐसा मुझे ज्ञात नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, मुझे विश्वास है कि आप वहां पहुँच कर लोगों को एक प्रेरणा देंगे कि अब संसद की परम्परा का उल्लंघन न हो, इसकी मुझे पूरी आशा और विश्वास है। आप हर समय परिस्थितियों के अनुरूप उठे हैं और इस समय भी आप उस परिस्थिति में उठ करके एक नयी परम्परा कायम करेंगे। सारे सदन ने आपको विश्वास दिया है, सदन का विश्वास प्राप्त करके सारे देश को आप नया विश्वास दें और पीड़ित लोगों की आवाज को बुलंद करें। इसी विश्वास के साथ मैं उर्दू का एक शेर कहना चाहूंगा – "जहां भी जाता है रोशनी लुटाता है, किसी चिराग का अपना मकां नहीं होता।"

महोदय, आज आप पार्टियों और सीमाओं से आबद्ध नहीं है, आप उससे ऊपर हैं। वहीं ऊपर रह कर देश को एक नयी दिशा दें, यही मुझे आपसे आशा है।

अध्यक्ष महोदय : बहुत–बहुत धन्यवाद।

[अनुवाद]

श्री एच. डी. देवेगौडा (हसन) : अध्यक्ष महोदय, यह मेरे लिए हृदय से आपको बधाई देने के सर्वाधिक प्रसन्नता भरे अवसरों में से एक है।

महोदय, वर्ष 1991 में जब से मैंने इस सर्वोच्च संस्था में एक सदस्य के रूप में प्रवेश किया है, मैं तभी से आपसे प्रेरित होता रहा हूं। आज, आपको सर्वसम्मति से चुना गया है। इससे गत तीन दशकों के दौरान इस सभा के सदस्य के रूप में आपके द्वारा अर्जित किया गया प्यार और स्नेह प्रदर्शित होता है।

विपक्ष में बैठते हुए आपने अपने वाक्पटु भाषणों से पूरी सभा को प्रेरित किया है। जब भी आपको ऐसा महसूस हुआ तो आपने–चाहे वह यह सरकार रही हो या वह सरकार रही हो – सरकार की असफलताओं को उजागर करने में किसी को भी नहीं छोड़ा है। आज मैं इस बात से बहुत प्रसन्न हूं कि आपने इस उच्च पद को स्वीकार किया है और आप इस सर्वोच्च संस्था के संरक्षक हैं।

महोदय, बहुत दुख के साथ मैं यह कहूंगा कि इस देश में संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली का क्षरण हम सब के लिए बड़ा दुखदायी है। सात से आठ वर्ष की छोटी सी अवधि के दौरान मै इस बात का साक्षी रहा कि हम सभी किस प्रकार सार्वजनिक जीवन के सभी मूल्यों में क्षरण के लिए जिम्मेदार रहे हैं। लोग चिंतापूर्वक बातें करते हैं और वे राजनैतिक दलों और राजनैतिक प्रणाली को कम सम्मान देते हैं। हम सब इसके लिए जिम्मेदार हैं। मैं इस देश में किसी एक को इसका दोष नहीं देना चाहता अपितु हम सभी इस स्थिति के लिए ज़िम्मेदार हैं।

मैं सत्ताधारी दल और विपक्षी दलों के नेताओं से नम्रता पूर्वक निवेदन करता हूँ कि इस सभा के मूल्यों, प्रतिष्ठा, शिष्टाचार और शालीनता को पुनः स्थापित करने में अपना पूरा–पूरा सहयोग दें। जब तक ऐसा नहीं होता है तब तक, महोदय, मुझे खेद है कि हम कुछ भी हासिल नहीं कर पाएंगे। इस स्तर पर यह हमारी राजनैतिक विचारधारा और प्रतिबद्धता पर चर्चा करने का मुद्दा नहीं है, मैं वाम दलों की कामगार वर्ग और समाज के अत्यन्त गरीब वर्ग के प्रति प्रतिबद्धता से अवगत हूँ। मैं इस पर आपके साथ हूँ। मैं इस मुद्दे पर विस्तार से नहीं जाना चाहता।

लेकिन आज आपकी जिम्मेदारी अधिक है। हम सभी इस सभा को मुद्दों पर चर्चा हेतु कार्यशील बनाने के प्रति चिंतित हैं। चाहें वह अल्पसंख्यकों का मुद्दा हो या दबे–कुचले लोगों या कामगारों या संगठित क्षेत्र या असंगठित क्षेत्र का मुद्दा ही क्यों न हो इसकी जिम्मेदारी पूरी सभा की और विशेषकर सत्ताधारी दल की है। जिसे इन सभी मुद्दों की अधिक जिम्मेदारी लेनी होगी।

महोदय, मैंने अपने राजनैतिक जीवन के 44 वर्षों में– लेकिन इसमें से अधिकांश समय मैंने राज्य विधानमंडल में व्यतीत किया है – केवल एक बार परंपरा का उल्लंघन किया है। आप सभी यहां थे। स्वर्गीय श्री इन्द्रजीत गुप्त यहां थे। वरिष्ठतम सांसदों में से एक श्री अटल बिहारी वाजपेयी इस ओर बैठे थे। महोदय किसानों के मुद्दे पर विश्व बैंक की शर्तों और प्रतिबंधिता के मुद्दे पर मैंने इसका विरोध किया था और अपने राजनैतिक जीवन के सभी मानदण्डों को तोड़ते हुए मैं अध्यक्ष के आसन के निकट चला गया था। इन शब्दों को याद रखें। मैं सत्ताधारी दल और पूरी सभा से अपना बहुमूल्य समय पीड़ित लोगों की समस्याओं पर चर्चा करने व उन्हें सुलझाने में व्यतीत करने का अनुरोध करता हूँ।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं हृदय से आपको यह सर्वोच्च पद ग्रहण करने पर बधाई देता हूँ। मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से आपको शुभकामनाएं देता हूँ।

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद।

[हिन्दी]

कोयला और खान मंत्री (श्री शिबु सोरेन) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आज की परिस्थिति में जो देश में हालात हैं, ऐसे संयोग में आप हमारे भारत देश की संसद के गार्जियन बने। आप हरेक से इतने परिचित और नजदीकी आदमी हैं, जिसे हर आदमी महसूस करता है। आपका सम्बन्ध लैफ्ट दल से है, जहां गरीबों की बात की जाती है, गरीबों के लिए आन्दोलन किया जाता है। हम लोग इससे काफी प्रभावित रहे हैं। आपको शहरों से लेकर गांवों तक के गरीबों का, आदिवासियों का, हरिजनों का ख्याल है, जानकारी है, यह भी हम लोग महसूस करते हैं। आज आप सर्वसम्मति से चुने गये हैं, यह बहुत सौभाग्य की बात है। इससे आप सभी को एक साथ लेकर चल सकते हैं, सब ने इस हाउस के अन्दर इसे स्वीकार किया है और इसी के साथ मेरी पूरी शुभकामनाएं हैं। आप उच्च संसदीय परम्पराओं का निर्वाह करते आये हैं और आगे भी इस गरिमामयी मर्यादा का निर्वाह करते हुए लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करते रहेंगे, यही मेरी और मेरी पार्टी की शुभकामना है।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मेरे पास तीन और माननीय संसद

सदस्यों के नाम हैं। क्या मैं उनसे सम्बद्ध होने का अनुरोध कर सकता हूँ? लेकिन मैं उनके नाम उठाऊंगा।

श्री असादूद्दीन ओवेसी (हैदराबाद) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपको इस सम्माननीय सभा का सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने पर बधाई देता हूँ।

आपके संसदीय लोकतंत्र के लम्बे अनुभव को देखते हुए मुझे विश्वास है कि आपको इस सभा के प्रत्येक सदस्य का समर्थन मिलेगा। इसी के साथ–साथ यह कहना चाहूंगा कि नए संसद सदस्य सबसे भाग्यशाली हैं कि उन्हें इस सम्माननीय सभा में आप जैसा अध्यक्ष मिला है।

कई संसद सदस्य यह पहले ही कह चुके हैं कि यहां ऐसे बहुत से संसद सदस्य हैं जो छोटे–छोटे दलों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मैं उनमें से एक हूँ। मैं ऐतिहासिक शहर हैदराबाद का प्रतिनिधित्व करता हूं। मुझे विश्वास है कि आपके अध्यक्षपीठ पर विराजमान होने से लोक सभा की कार्यशैली में निखार आएगा और इस प्रतिष्ठित सभा में जीवंत वाद–विवाद से भारत भी वास्तव में निखरेगा।

मैं यह जानता हूँ कि आपने "मिडिल टैम्पल" से वकालत की है। आपके अन्दर का अधिवक्ता मेरे अन्दर के वकील को नहीं भूलेगा जिसने 'लिन्कन्स इन' से वकालत की है। मैं आपसे यह अनुरोध करता हूँ कि छोटे दलों को आम आदमी और विशेषकर अल्पसंख्यकों से संबंधित मुद्दों को उठाने हेतु अधिक समय और अवसर दिए जाएं।

श्री पी. सी. थामस (मुवत्तुपुजा) : मैं आपको इस प्रतिष्ठित सभा का अध्यक्ष चुने जाने पर बधाई देता हूँ।

आपके लम्बे अनुभव, अच्छे राजनेता के रूप में आपके कद, एक अच्छे सांसद के आपके अनुभव और भारत को मिले सर्वश्रेष्ठ सांसदों में से आपके एक होने से मुझे विश्वास है कि इस सभा और समग्र रूप से देश के साथ भी न्याय होगा।

मैं केरल से आता हूं और एक ऐसे निर्वाचन क्षेत्र से आता हूँ जहां अनन्नास पैदा होते हैं। यह चटपटा नहीं होता अपितु मीठा होता है। मैं अभी आपको एक मीठा अनन्नास भेंट करना चाहता हूँ परन्तु मुझे खेद है कि मैं उसे यहां नहीं ला सकता हूँ। मैं केवल किसानों के मुद्दों पर प्रकाश डालना चाहता हूँ। अनन्नास, नारियल और रबड़ केरल की कृषि उपज है जो कि अन्य स्थानों पर उगाये जाने वाले कृषि उत्पादों से थोड़ी अलग है। अतः हमें उन किसानों के मुद्दों को उठाने का अवसर दिया जाए। मुझे विश्वास है कि आप एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिनमें आम समझ है जो कि आजकल उतनी आम नहीं रह गई है। मुझे विश्वास है कि आप इस सभा के सभी पक्षों को प्रासंगिक मुद्दों को उठाने का अवसर दे पाएंगे।

मैं यह भी कहना चाहूंगा कि केरल के मेरे सभी साथी उस ओर बैठे हैं। अतः जब मैं विरोध में कुछ कहूं तो आप मुझे कुछ और समय देने के लिए मेरा ध्यान रखेंगे।

मैं इस अवसर पर पुनः आपको धन्यवाद दूंगा और भगवान से यह प्रार्थना करूंगा कि आपका अनुभव इस सभा के सभी सदस्यों तथा सभी पक्षों के लिए सहायक होगा।

श्री के. फ्रांसिस जार्ज (इदुक्की) : महोदय, आरम्भ में मैं, सभा में अपने सभी वरिष्ठ साथियों के साथ आपको लोक सभा के अध्यक्ष का पद ग्रहण करने पर बधाई देता हूँ।

इस पद के लिए आपका सरलता और सर्वसम्मति से चयन यह दर्शाता है कि आपने किस प्रकार दलगत राजनीति से हटकर संसदीय लोकतंत्र की उच्च परंपराओं का पालन किया है।

जिस प्रकार सभा में आपका व्यवहार रहता है, जिस प्रकार संसदीय वाद–विवाद में आपने जीवंत तर्क दिए हैं और जिस प्रकार आपने सदन में सर्वदा शिष्टाचार व सभ्यता बनाए रखी है उससे आप कनिष्ठ और वरिष्ठ दोनों ही प्रकार के सदस्यों के लिए इस सभा में आदर्श रहे हैं।

आपको एक दूभर कार्य करना है। इस देश के लोग चौदहवीं लोक सभा से, विशेषकर आर्थिक मोर्चे पर बहुत से सुधारात्मक उपाय किए जाने की अपेक्षा रखते हैं। मुझे विश्वास है कि आप हमें दिशानिर्देशित करेंगे और सरकार तथा इस देश के कृषि तथा श्रमिक क्षेत्र की सहायता करने हेतु सुधारात्मक कदम उठाएंगे। मेरे बाएं ओर माननीय वित्त मंत्री जी बैठे हैं। मुझे आशा है कि वे हमारे देश के इस संकटग्रस्त क्षेत्र की सहायता करने हेतु सुधारात्मक कदम उठाएंगे।

इस सभा में हमारे साथ बहुत से नए सदस्य हैं। हमें अपने उन सभी पुराने मित्रों के प्रति खेद है जो इस बार चुनकर नहीं आ सके। हमारे साथ लगभग 200 नए सदस्य हैं और जैसा कि कुमारी मायावती और कुछ अन्य माननीय संसद सदस्यों ने यहां कहा है, मुझे आशा है कि आप, 'सौम्य' उपेक्ष की नीति' जिसका हमें पहले भी बहुत बार सामना करना पड़ा है, के स्थान पर छोटे दलों और नए संसद सदस्यों को अवसर देंगे...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आइए हम श्रेष्ठतम की कामना करें।

...(व्यवधान)

श्री के. फ्रांसिस जार्ज : मैं नया सदस्य नहीं हूँ, मैं एक छोटे दल का हूँ।

महोदय, मैं एक बार फिर आपको बधाई देता हूँ। अंत में आपको बधाई देते हुए मैं केवल यह कह सकता हूँ – मैं नहीं जानता कि आप इस बात को किस तरह लेंगे – कि आपकी निजी जिंदगी तथा नए पद में भी ईश्वर अपनी कृपा बनाए रखे ताकि आप इस सभा के सभी दलों के लिए कर्त्तव्यों का निर्वहन पूर्ण निष्पक्षता से तथा संतुलित रूप से और स्फूर्ति से कर सकें। ताकि सभी संतुष्ट हो सकें।

श्री सानछुमा खुंगुर बैसीमुथियारी (कोकराझार) : माननीय अध्यक्ष महोदय, यह मेरे लिए अत्यधिक सौभाग्य और सम्मान की बात है कि मैं आपको इस सम्माननीय सभा के माननीय अध्यक्ष के लिए सर्वसम्मति और वह भी भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के सबसे उपेक्षित और पिछडे राज्य से चुने जाने पर अपनी ओर से तथा बोडोलैंड संघ राज्य क्षेत्र के करोड़ों लोगों की ओर से बधाई दे रहा हूं।

[हिन्दी]

आप बंगाल से चुने हुए सांसद हैं। बोडोलैंड इलाका आपके प्रदेश से लगा हुआ है। आपसे मेरा विनम्र अनुरोध यही रहेगा कि हम जैसे बहुत पिछड़े इलाके से चुने हुए सांसदों को हमारी समस्याओं के बारे में, बोडोलैंड के मुद्दे के ऊपर, ट्राईबल लोगों के मुद्दे के ऊपर, पिछडे लोगों के मुद्दे के ऊपर बातचीत करने के लिए आप हमें काफी मौका देंगे।

[अनुवाद]

महोदय, मैं आप से अपील करता हूँ कि प्रस्तावित द्वितीय राज्य पुनर्गठन आयोग के गठन के साथ ही केन्द्र में यूपीए सरकार के सीएमपी के निदेशपद के मानदंडों में बोडोलैंड और अन्य पात्र क्षेत्रों का प्रश्न भी अंततः शामिल किया जाए। शर्तें और प्रस्तावित आयोग के निदेशपद मात्र तेलंगाना राज्य के गठन के प्रश्न तक सीमित नहीं रहने चाहिए। अपितु बोडोलैंड और अन्य क्षेत्र भी शामिल किए जाने चाहिए। यह मेरा विनम्र निवेदन है।

महोदय, मैं पुनः एक बार आपसे अपील करता हूँ कि मुझ जैसे छोटे दलों के संसद सदस्यों को पर्याप्त समय, अवसर और सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए ताकि वह देश की दलित जनता की अनकही त्रासदियों और विविध समस्याओं को उजागर कर सके।

[हिन्दी]

मैं आखिर में आपको शुभकामनाएं देता हूँ और बोडोलैंड जनता की तरफ से कई लोगों की तरफ से आपको हजारों हार्दिक बधाई देता हूँ।

अपराह्न 1.19 बजे

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय द्वारा सदस्यों को धन्यवाद

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, मैं आपका अत्यधिक आभारी हूं कि आपने मुझे इस सम्मानीय सभा के अध्यक्ष के उच्चपद के लिए सर्वसम्मति से चुना है। मेरा इतना अत्यधिक सम्मान करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है कि मैं उन भावनाओं को व्यक्त कर सकूं और मैं इस बात को विनम्रता और कृतज्ञता से स्वीकार करता हूँ। मैं इस सभा के सभी दलों द्वारा व्यक्त उदार भावनाओं से अभिभूत हूँ।

आज मैं इस बात को याद किए बिना नहीं रह सकता जब मैं पहली बार वर्ष 1971 में एक नए सदस्य के रूप में इस महान सभा में आया था और मैं यह बात स्वीकार करता हूँ कि उन दिग्गज और जाने माने नेताओं की उपस्थिति में मैं भयभीत था जिन्होंने इस सभा की कार्यशैली की शोभा बढ़ाई। अंतिम पंक्ति में बैठने के कारण मुझे सभा के भीतर महत्वपूर्ण भाषण सुनने का अवसर मिला जिसने मुझे उस विश्वास के लायक बनने के लिए प्रेरित किया जो जनता ने मुझे निर्वाचित करके मुझ पर किया था। मैं, दर्शक दीर्घा से सभा की कार्यवाही देखने की बात भी भूल नहीं सकता हूँ जब मेरे पिता स्वर्गीय श्री एन. सी. चटर्जी, एक सदस्य थे। मुझे अन्य लोगों के अलावा, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, पंडित पंत, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, श्री एन. सी. चटर्जी, प्रो. हीरेन मुखर्जी, श्री नाथ पइ और अन्य लोगों के सर्वाधिक प्रेरक भाषण सुनने का सौभाग्य मिला। कृपया मुझे क्षमा कीजिए कि मैं इस अवसर पर अतीत की यादों में खो रहा हूँ।

मैं माननीय प्रधानमंत्री का भी आभारी हूँ कि उन्होंने यहां मेरे पिता का उल्लेख किया। मुझे लगता है कि उनका जो सम्मान किया गया है वह बिल्कुल औचित्यपूर्ण था और उन्होंने कहीं बढ़ चढ़कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की और आज मैं इस उच्च पद को ग्रहण करते समय उन्हें फिर एक बार बधाई देता हूँ।

माननीय सदस्यों, चौदहवीं लोक सभा में लोगों ने नए युग का सूत्रपात करने हेतु जनादेश दिया है। यह अनोखा उत्तरदायित्व इस सम्माननीय सभा को सौंपा गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश ने विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की है। तथापि, आम आदमी के हित के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। जनहितकारी धर्मनिरपेक्ष प्रशासन प्रदान करके हमें सुनिश्चित करना होगा कि हमारी जनता की रचनात्मक क्षमता और ऊर्जा का उपयोग हमारे समाज के विभिन्न वर्गों विशेष रूप से वंचित और बेदखल लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने में हो।

लोक सभा विश्व के सबसे बड़े संसदीय लोकतंत्र का उच्चतम निर्वाचित निकाय है और हमारी राजनैतिक व्यवस्था में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे देश के निर्माताओं ने काफी विचार–विमर्श के पश्चात् प्रशासन की संसदीय प्रणाली स्वीकार करने का निर्णय लिया जिसमें लोक सभा का निर्वाचन वयस्क मतदान से होता है तथा मंत्रिपरिषद इसके प्रति उत्तरदायी होती है, भारत की जनता लोक सभा में अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से संसदीय प्रक्रिया में भाग लेती है। संसद सदस्य जो अपने घोषणा पत्रों में अंतर्विष्ट अपने वायदों के आधार पर चुने जाते हैं; उनसे अपेक्षा की जाती है कि वह जनता की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरा करेंगे, राष्ट्र के समक्ष आ रही समस्याओं और मुद्दों पर चर्चा करेंगे तथा इनका समाधान निकालने की दृष्टि से राष्ट्रीय नीतियों और कार्यक्रमों को बनाने पर चर्चा करेंगे। हमारे संविधान में यथा अंतर्विष्ट संसदीय लोकतंत्र की पहली शर्त केन्द्रीय मंत्रिपरिषद् का लोक सभा के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व है। सरकार की प्रत्येक कार्यवाही के लिए उसे इस सभा में उत्तर देना होता है।

यह सभा विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक पहचान, लोकाचार और प्रतिभा, मतों, हितों, दृष्टिकोण और उद्देश्यों के मतभेद वाली हमारी जनता के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करती है जो इस में विचार–विमर्श के दौरान उठते ही हैं। देश में एक मजबूत एकीकृत करने वाली शक्ति के रूप में इस सभा, जो सही मायने में जनता की संस्था है, को जनता की सामाजिक – राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए बुलाया जाता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पांच दशक से अधिक समय के बाद भी, इस दौरान हमने संसद का स्वर्ण जयंती समारोह मनाया है, हमारी जनता का बहुत बड़ा भाग अभी भी गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है और उन न्यूनतम अधिकारों का उपयोग भी नही करता है जिनकी हमारे संविधान, हमारे मूलभूत कानून ने व्यवस्था की है। घोर दरिद्रता, निरक्षरता, अत्यधिक शिशु मृत्युदर, पर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल का अभाव, रोजगार के अवसरों का अभाव, अनेक क्षेत्रों में शुद्ध पेयजल की अनुपलब्धता ऐसी समस्याएं हैं जो आम आदमी के जीवन में अभी भी बनी हुई हैं और इसके परिणामस्वरूप हमारी जनता उन संवैधानिक और निःसन्देह मूलभूत मानवीय अधिकारों से वंचित हो गई है।

हमारे देश का आम आदमी, विशेष रूप से मेहनतकश वर्ग, श्रमिक, खेतिहर मजदूर और किसान, अनुसूचित जातियां और अनुसूचित जनजातियां, महिलाएं और अल्पसंख्यक अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ हैं। बढ़ती हुई बेरोजगारी के आंकड़ों के चलते हमारे देश में श्रमिक वर्ग की स्थिति अभी भी अत्यधिक अनिश्चित है। इन परिस्थितयों में मैं महसूस करता हूं कि हम सभी का परम कर्तव्य है कि हम संसद सदस्य के रूप में जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने में अत्यधिक सक्रिय, जिम्मेदाराना और प्रभावी भूमिका निभाएं।

संसद का गठन जनता द्वारा होता है। उसे जनता की समस्याओं पर विचार–विमर्श करना पड़ता है और अंततः उनकी समस्याओं का समाधान निकालना पड़ता है।

लोक सभा में सुचारु कार्य संचालक के लिए कार्य संचालन और प्रक्रिया नियम बनाए गए हैं तथा नियमों में जनता की शिकायतों के निवारण के लिए अनेक उपायों का भी उपबंध किया गया है। सभी माननीय सदस्यों से मेरा निवेदन है कि वह इन नियमों का उचित रूप से उपयोग करें ताकि वे इस सम्मानीय सभा के सदस्यों के रूप में प्रभावी भूमिका निभा सकें।

आजकल संसद सदस्यों को सभा में शिष्टाचार और प्रतिष्ठा कायम न रख पाने में काफी आलोचना सुननी पड़ रही है। कुछ संसद–सदस्यों का व्यवहार और आचरण उचित आलोचना और कुछ मामलों में मज़ाक का विषय बन गया है। दुर्भाग्य से हमारे राजनैतिक जीवन में सहयोग की अपेक्षा लड़ाई – झगड़े का दृष्टिकोण बलवती हो रहा है जिसका प्रतिबिंब सभा में दिखाई देता है। हमें सभा के भीतर और बाहर अपने आचरण के द्वारा जनता के मन से यह धारणा निकालने का संकल्प करना चाहिए।

माननीय सदस्यों, इस सम्माननीय सभा के अध्यक्ष के रूप में जो उत्तरदायित्व मुझे सौंपा गया है, उसकी मुझे पूर्णतः जानकारी है। सभा में आज आपने सहर्ष सहयोग का जो वायदा किया है, उससे इस महान उत्तरदायित्व को पूरा करने की तथा आपके द्वारा व्यक्त विश्वास पर खरा उतरने की शक्ति मिलती है। मुझे सौंपी गई जिम्मेदारी को समझते हुए मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं कि मैं हमारे महान संविधान तथा प्रक्रिया के नियमों में वर्णित गौरवशाली आदर्शों तथा उत्कृष्ट लक्ष्यों और

उच्चतम संसदीय परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए इस सभा का कार्य संचालित करने का प्रयास करूंगा।

मैं इस बात के प्रति पूर्णतया सतर्क हूँ कि अध्यक्ष के रूप में मेरे आचरण और व्यवहार पर हमेशा कड़ी नजर रखी जाएगी। मैं श्री विट्ठल भाई पटेल, श्री जी. वी. मावलंकर से लेकर श्री मनोहर जोशी तक के मेरे पूर्ववर्तियों द्वारा स्थापित किए गए उच्च मानदण्डों को बनाए रखने और यदि संभव हुआ तो इस सभा की कार्यवाहियों को चलाने तथा इसके सदस्यों की चिंताओं को दूर करने में इस उच्च संवैधानिक पद की प्रतिष्ठा और गौरव को और बढ़ाने का भरसक प्रयास करूंगा।

मैं इस पद पर रहते हुए अपने कार्यों का निर्वहण कर्त्तव्यों की भांति करूंगा न कि प्राधिकारी की भांति। हमारी संसदीय शासन प्रणाली में अध्यक्ष पद दलीय राजनीति से अप्रभावित होता है। इससे मेरे ऊपर सभा की कार्यवाही को विनियमित करते समय पूर्ण निष्पक्षता और विवेक–सम्मत बने रहने का एक विशेष दायित्व रहेगा। मैं आपको आश्वस्त करता हूँ कि जब तक मैं इस गरिमामय पद पर रहूंगा तब तक मैं इस सभा व इसके सदस्यों, चाहें वे किसी भी राजनैतिक दल से सम्बन्ध रखते हों, के अधिकारों और विशेषाधिकारों की रक्षा करने का भरसक प्रयास करूंगा।

माननीय सदस्यों, मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ कि मेरे लिए सभी संसद सदस्य, चाहे वे किसी भी दल से सम्बन्ध रखते हों, एक समान हैं और वे समान सुविधाओं तथा अवसरों के अधिकारी हैं। मेरे लिए आप सभी की पहचान केवल इतनी है कि आप सभी इस महान संस्था के निर्वाचित और माननीय सदस्य हैं, पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 6 दिसम्बर, 1957 को संसदीय लोकतंत्र पर आयोजित एक संगोष्ठी में कहा था कि :

"लंबे तर्क–वितर्कों तथा विचार–विमर्श के पश्चात् हमने भारत में संसदीय सरकार पर आधारित संविधान को अंगीकार किया है। हम संसदीय प्रणाली की सरकार की प्रशंसा करते हैं क्योंकि समस्याओं से निपटने का यह एक शांतिपूर्ण तरीका है, यह समझौता, चर्चा, निर्णय और निर्णय को स्वीकार करने की एक प्रक्रिया है चाहे इससे कोई व्यक्ति सहमत या असहमत हो सकता है, तथापि, संसदीय सरकार में एक अल्पमत पक्ष को भी एक बहुमत महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है। स्वाभाविक रूप से बहुमत प्राप्त पक्ष, चूंकि वह बहुमत प्राप्त है, अपनी बात पूरी कर सकता है।"

संसद को वाद–विवाद, चर्चा और सहमति से कार्य करना चाहिए और वह ऐसा तभी कर सकती है जब विचार–विमर्श में जनता की चिंताओं के प्रति प्रतिबद्धता हो और सभा के वातावरण को कटुता और उग्रता से मुक्त रखा जाए। जब तक प्रत्येक सदस्य द्वारा नियमों, विनियमों और सुस्थापित संसदीय परंपराओं का आदर नहीं किया जाएगा और जब तक सदस्यों द्वारा विचारों में मतभेद होने पर आपसी सामंजस्य और आदर का परिचय नहीं दिया जाएगा तब तक हमारा संसदीय लोकतंत्र अधूरा रहेगा। देश में अच्छी शासन व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों ही समान रूप से जिम्मेदार हैं। अपने संसदीय दायित्वों का निर्वहण करते समय विशेषकर तब जबकि सभा में किन्हीं विवादास्पद मुद्दों पर चर्चा होती है, दोनों पक्षों से आपसी सामंजस्य और सहिष्णुता का परिचय दिए जाने की अपेक्षा की जाती है।

लोगों की नजरों में एक संसद सदस्य का बहुत ऊंचा स्थान होता है। इस सभा का प्रभावी कार्यकरण बहुत हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि हम, सदस्यगण कितनी ईमानदारी से उन विभिन्न नियमों व दिशानिर्देशों का पालन करते हैं जो कि संसदीय कार्यों के सुचारू संचालन की पूर्वापेक्षा हैं। यहां, मुझे इस बात पर बल देने की आवश्यकता नहीं है कि सभा के सुचारू और कुशल कार्यकरण हेतु सदस्यों द्वारा अनुशासन और शिष्टाचार बनाए रखना पूर्व शर्त है। प्रक्रिया और कार्य–संचालन नियमों के अतिरिक्त यहां बहुत सी रूढ़ियां और परंपराएं हैं, संसदीय शिष्टाचार के नियम हैं तथा अलिखित परंपराएं हैं तथा संसदीय शिष्टाचार को बनाए रखने के लिए प्रत्येक सदस्य को इनका पालन करना होगा। किसी को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि हमारे व्यवहार की गुणवत्ता और हमारे विचार–विमर्श का सार ही इस बात का निर्णय करेगा कि क्या हम इस प्रतिष्ठित सभा की प्रतिष्ठा को बढ़ाने व हमारी संसदीय संस्था में विश्वास को बढ़ावा देने में सक्षम हैं या नहीं।

हाल ही में सम्पन्न हुए आम चुनावों में इस लोक सभा में बहुत से युवा चेहरे पहली बार चुनकर आ रहे हैं। आम आदमी की आशाओं और आकांक्षाओं से संबंधित मुद्दों को हल करने में इस सभा को वरिष्ठ सदस्यों के अनुभव व रचनात्मक ऊर्जा का सम्मिलित रूप से उपयोग करने का लाभ मिलेगा।

मुझे आशा है कि प्रत्येक नवनिर्वाचित सदस्य प्रतिबद्धता के साथ कार्य करेगा और इसके नियमों को सीखकर उनका पालन करते हुए सभा की कार्यवाहियों में अपना मूल्यवान योगदान देगा। मैं नवागन्तुकों को यह सुझाव दूंगा कि वे स्वयं को स्थापित संसदीय परंपराओं और रूढ़ियों से सुपरिचित करेंगे और अपने मूल्यवान प्रक्रियागत उपकरणों के माध्यम से उनका पूरा

उपयोग करेंगे जिससे कि वे जनता की शिकायतों को दूर करने में अपना प्रभावी योगदान दे सकें।

जनता और संसद के बीच सम्पर्क का कार्य करने वाले मीडिया की भूमिका को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। मुझे इसका पूरा विश्वास है कि मीडिया द्वारा इस सभा की कार्यवाहियों का जिम्मेदारीपूर्वक व पर्याप्त प्रसारण इस सर्वोच्च राष्ट्रीय मंच की सही छवि प्रस्तुत करने में लंबे समय तक सहायक होगा। मैं मीडिया से सार्थक सहयोग चाहता हूँ।

मेरे बारे में माननीय सदस्यों द्वारा व्यक्त किए गए हार्दिक उद्‌गारों और मुझे अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने का आश्वासन देने के लिए मैं उनका आभारी हूं। मैं माननीय प्रधानमंत्री जी; सदन के माननीय नेता; श्रीमती सोनिया गांधी जी; श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी; विपक्ष के नेता माननीय श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी; विभिन्न दलों के नेताओं; और अन्य प्रतिष्ठित मित्रों का उनके द्वारा मेरे बारे में व्यक्त की गई हार्दिक भावनाओं के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। सभा के सफलतापूर्वक संचालन के लिए मुझे आपका सहयोग चाहिए। मैं अपनी ओर से आपको पुन. आश्वस्त कर दूं कि आपने मुझमें जो विश्वास व्यक्त किया है तथा आपकी मुझ से जो आकांक्षाएं हैं मैं उस पर खरा उतरने का पूरा प्रयास करूंगा।

आइए, हम सब मिलकर लोगों द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों के रूप में अपने कर्त्तव्यों का इस प्रकार निर्वहण करें कि हमारा देश शांति, प्रगति और समृद्धि के एक नए युग में प्रवेश करे। अपने इस दुरूर कर्त्तव्य का पालन करने में मैं आपका विनम्र सहयोग और सहायता चाहता हूँ।

मैं वामपंथी दल से संबंध रखता हूं इसलिए एक वामपंथी होने के नाते मेरे बाएं ओर बैठे लोग इस बात से आश्वस्त हो सकते हैं कि मेरा सुझाव स्वाभाविक रूप से वामपंथ की ओर है। आइए संकल्प करें कि हमें सौंपे गए कार्य को हम अपनी योग्यता व पूर्ण गंभीरता के साथ पूरा करेंगे। जब प्रतिदिन शाम के समय हम सभा का अपना कार्य समाप्त करके उठें तो हमें स्वयं से यह पूछना चाहिए कि हमने इस दिन देश के लिए व लोगों के लिए क्या किया है तथा क्या हम लोगों के उस विश्वास पर खरे उतरे हैं जो उन्होंने हमें यहां भेजकर व्यक्त किया है।

अपनी ओर से श्रेष्ठतम कार्य करने के प्रयास की भावना के अतिरिक्त और कुछ भी हमें संतुष्टि प्रदान नहीं कर सकता।

आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।

मित्रों तीन माननीय संसद सदस्य अभी तक शपथ ग्रहण नहीं कर पाए हैं और उनमें से एक माननीय सदस्य का स्वास्थ्य बहुत खराब है। क्या मैं उन्हें शपथ लेने का अवसर प्रदान कर सकता हूं? जी हां, महासचिव महोदय, कृपया उनके नाम पुकारें।

अपराह्न 1.33 बजे

[अनुवाद]

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण – *जारी*

श्री रामचन्द्र वीरप्पा (बीदर)

अध्यक्ष महोदय : श्री रामचन्द्र वीरप्पा, हम सब आपके शीघ्र और पूर्ण स्वस्थ होने की कामना करते हैं।

श्री गौरीशंकर चतुर्भुज बिसेन (बालाघाट)

श्री धनुषकोडी आर. अतिथन (तिरुनेलेवली)

अपराह्न 1.33 बजे

[अनुवाद]

प्रधानमंत्री, सदन के नेता और विपक्ष के नेता का परिचय

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, सदन में प्रधानमंत्री, डा. मनमोहन सिह का परिचय कराते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। उन्हें किसी विस्तृत परिचय की आवश्यकता नहीं है। हम उन्हें उनके कार्य में सफलता की शुभकामनाएं देते हैं।

इसके साथ ही, सदन के नेता, श्री प्रणब मुखर्जी तथा विपक्ष के नेता, श्री लाल कृष्ण आडवाणी का परिचय कराते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है।

अब माननीय प्रधानमंत्रीजी मंत्रिपरिषद् का परिचय करायेंगे।

[अनुवाद]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी (गांधीनगर) : अध्यक्ष महोदय, मतदान की घोषणा होते ही और परिणाम आते ही प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने अपना त्याग पत्र दे दिया

क्योंकि हमने इस बात को स्वीकार किया कि एनडीए सरकार को फिर से जनादेश नहीं मिला। उसके कुछ दिन बाद जब राष्ट्रपति जी ने डाक्टर मनमोहन सिंह जी को प्रधानमंत्री के रूप में आमंत्रित किया तो मैं मानता हूं कि साधारणतः किसी भी लोकतांत्रिक देश में जितने भी मतभेद होतें हैं, उनके बावजूद सब लोगों के मन में खुशी हुई कि एक बेदाग शख्सियत ने प्रधानमंत्री का पद भार सम्भाला है। मैं प्रधान मंत्री जी से विनम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि जब मंत्रिमंडल का गठन हुआ, उस समय बहुत सारे लोगों को काफी निराशा हुई क्योंकि इतना बेदाग प्रधान मंत्री....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं माननीय सदस्यों से अपना स्थान ग्रहण करने का आग्रह करता हूँ।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं आपसे अपना स्थान ग्रहण करने का आग्रह करता हूं।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं यहाँ सबके संरक्षण के लिए हूँ। कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए। मैं विपक्ष के नेता से इस विषय पर संक्षेप में बोलने का आग्रह करता हूँ। साधारणतया, इस समय यह विषय नहीं उठाया जाता। तथापि, मैंने उन्हें बोलने की अनुमति दी है क्योंकि वे संक्षेप में कुछ कहना चाहते हैं। कृपया अपनी बात संक्षेप में कहें।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : माननीय प्रधानमंत्री अपने मंत्रियों का परिचय करायेंगे।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, कृपया सहयोग करें। यदि विपक्ष के नेता कोई बात संक्षेप में कहना चाहते हैं, तो उन्हें कहने दें। उसके बाद मैं आपको भी इसका उत्तर देने का अवसर दूंगा।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं आपको इसका पूरा अवसर दूंगा। माननीय सदस्य, कृपया अपना स्थान ग्रहण करें।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री रघुनाथ झा, मैं आपसे अध्यक्षपीठ से सहयोग करने का अनुरोध करता हूँ। कृपया अपना स्थान ग्रहण करें।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आडवाणीजी, कृपया संक्षेप में अपनी बात कहिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : हम यह जानते हैं कि यह प्रधानमंत्री का विशेषाधिकार है कि वे अपने सहयोगियों का चयन करें। लेकिन यदि विपक्ष के नेता संक्षेप में कोई निवेदन करना चाहते हैं, तो मैं उन्हें इसकी अनुमति दूंगा। उसके बाद माननीय प्रधानमंत्री बोलेंगे।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, आप क्यों खड़े हैं? मैंने उन्हें बोलने की अनुमति दी है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : हमें नए तरीके से कार्य प्रारम्भ करना है। श्री आडवाणी जी, मुझे पता है कि आप स्पष्टवादी हैं। मैं आपसे संक्षेप में अपना निवेदन करने का आग्रह करता हूं।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैंने केवल दो ही वाक्य कहें हैं...*(व्यवधान)* मैंने कुछ भी नहीं कहा है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : हाँ, मुझे यह पता है। मैं आप सबसे अध्यक्षपीठ के साथ सहयोग करने का अनुरोध करूंगा। हम सबको यह मालूम है कि मंत्रिपरिषद के सहयोगियों को चुनने का विशेषाधिकार केवल माननीय प्रधानमंत्री का है। परन्तु यदि विपक्ष के नेता संक्षेप में कोई निवेदन करना चाहें, तो मैं उसकी उपेक्षा नहीं कर सकता। मैं उनसे संक्षेप में निवेदन करने का आग्रह करूंगा।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं श्री लालकृष्ण आडवाणी को उनका निवेदन करने की अनुमति देता हूँ।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : इसके कोई संदेह नहीं है कि माननीय प्रधानमंत्री अपनी मंत्रिपरिषद का यहां परिचय देंगे। यदि वे इसमें कुछ और जोड़ना चाहें, तो वे निश्चय ही ऐसा कर सकते हैं।

अब श्री लाल कृष्ण आडवाणी!

[हिन्दी]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे इस अवसर पर एक ऐसी बात उठाने का मौका दिया, जिसमें न केवल विपक्ष बल्कि मैं समझता हूं कि जो पार्टियां इस सरकार का समर्थन कर रही हैं, उनको भी यह बात अच्छी नहीं लगी कि जब यह निर्णय हुआ *....(व्यवधान)* आपसे अधिक इस सच्चाई को कौन जानता है *...(व्यवधान)* इसलिए कल दोनों सदनों के 200 से अधिक सदस्य महामहिम राष्ट्रपति जी के पास गये थे और इसी संदर्भ में जिक्र किया...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आपके लीडर बोल रहे हैं।

[अनुवाद]

आपके नेता बोल रहे हैं, आप क्यों व्यवधान कर रहे हैं?

...(व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : वे व्यवधान कर रहे हैं... *(व्यवधान)* यदि वे ऐसे ही व्यवधान करते रहे तो मैं कैसे बोल सकता हूं?...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, कृपया अध्यक्षपीठ से सहयोग करें। विपक्ष के नेता को अपना निवेदन करने दें।

[हिन्दी]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष जी, शुरू से लेकर आज तक मंत्रिमंडल अनेक बार गठित हुये हैं...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपनी बात संक्षेप में कहें।

...(व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : यदि वे इसी तरह व्यवधान करते रहे तो मैं संक्षेप में अपनी बात नहीं कह सकता *...(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, कृपया सहयोग कीजिए। अब तक यह बात समाप्त हो चुकी होती। कृपया उन्हें बोलने दें।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं गम्भीरतापूर्वक आपसे सहयोग करने की अपील करता हूँ। यह बात दो मिनट में समाप्त हो जायेगी।

[हिन्दी]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष जी, यहां एक स्थापित परम्परा रही है। मंत्रिमंडल का गठन करते समय प्रधान मंत्री का यह प्रैरोगेटिव है कि किसे लिया जाये और किसे न लिया जाये लेकिन यह भी परम्परा है कि यदि किसी का क्रिमिनल बैकग्राउंड है, तो मंत्रिमंडल उसे स्वीकार नहीं करता रहा है ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं आप सबसे एक बार फिर अपील करता हूँ। आप सब अध्यक्षपीठ से सहयोग करने के विषय में काफी उदार रहे हैं। मैं आपसे दो मिनट के लिए धीरज रखने का आग्रह कर रहा हूं। मैं जानता हूं कि यह कोई आम बात नहीं है।

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

कुंवर मानवेन्द्र सिंह (मथुरा) : अध्यक्ष महोदय, इन्हें ऐसा कहने का कोई अधिकार नहीं है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए। जब पीठासीन अधिकारी बोल रहा हो तो मैं व्यवधान की अनुमति नहीं दूंगा। कृपया अपना स्थान ग्रहण करें।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना स्थान ग्रहण करें।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं 'आचार संहिता' के उल्लंघन की अनुमति नहीं दूंगा। इसके प्रति आप निश्चिंत रहें। यदि आप सभा का कार्य व्यवस्था के अनुसार नहीं चलने देंगे तो यह बात इस अध्यक्षपीठ द्वारा सहन नहीं की जाएगी। मेरा सभी माननीय सदस्यों से यह आग्रह है।

माननीय प्रधानमंत्री को अपनी मंत्रिपरिषद् चुनने का पूरा अधिकार है। मैंने उन्हें यहां अपनी मंत्रिपरिषद का परिचय कराने के लिए बुलाया था। लेकिन विपक्ष के नेता द्वारा निवेदन किया गया था। मैंने भी यह महसूस किया था कि हमें सहयोग और सर्वसम्मति का एक नया अध्याय शुरू करना चाहिए। अब मैं फिर से विपक्ष के नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी से विवाद से बचते हुए संक्षेप में अपनी बात कहने का आग्रह करता हूँ।

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री राम कृपाल यादव (पटना) : अध्यक्ष महोदय, ये परम्परा के विपरीत काम कर रहे हैं...*(व्यवधान)*

कुंवर मानवेन्द्र सिंह : अध्यक्ष महोदय, इन्हें ऐसी बात कहने का कोई अधिकार नहीं है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया आप बैठ जाइये। मुझे कोई अप्रिय कार्रवाई करने को बाध्य न करें।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : जब मैं खड़ा हूँ तो आपको बैठ जाना चाहिए।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : जब मैं खड़ा हूँ तो आपको बैठ जाना चाहिए। कृपया बैठ जाएं।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया आप अपना स्थान ग्रहण करें अन्यथा मुझे पहले ही दिन कोई अप्रिय कार्रवाई करनी पड़ेगी। कृपया ऐसा न करें।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया जब अध्यक्ष बोल रहे हों तो आप सब को अपना स्थान ग्रहण करना चाहिए। हमें मनमानी नहीं करनी चाहिये।

...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा (दक्षिण दिल्ली) : अध्यक्ष महोदय, अगर लीडर आफ दि अपोजीशन को नहीं सुना जाएगा तो उधर से भी कोई नहीं बोल सकेगा...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री मल्होत्रा, मैंने इसके लिए आग्रह किया है। आपके नेताओं ने भी यह बात पहले कही है। चलिए इसकी प्रतिक्रिया देखते हैं।

श्री आडवाणी जी, मैं आपसे बहुत संक्षिप्त में अपनी बात रखने का आग्रह करता हूँ।

...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप मुझे बोलने दीजिए।

[अनुवाद]

कृपया उन्हें वह कहने दें जो वे कहना चाहते हैं। आप इसमें व्यवधान क्यों कर रहे हैं?

श्री आडवाणी, मैं गम्भीरतापूर्वक आपसे अपनी बात समाप्त करने की अपील करता हूं।

...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष जी, स्वतंत्र भारत में 14–15 प्रधान मंत्री हुए हैं। अगर श्री नन्दा जी को माना जाए, तो आप 15वें प्रधान मंत्री हैं, लेकिन अभी तक किसी प्रधान मंत्री ने अपने मंत्रिमंडल में ऐसे लोगों को शामिल नहीं किया। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब माननीय प्रधानमंत्री जी बोलेंगे।

अपराह्न 1.49 बजे

[अनुवाद]

मंत्रियों का परिचय

प्रधानमंत्री (डा. मनमोहन सिंह) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपकी अनुमति से मैं आपसे तथा आपके माध्यम से इस सम्माननीय सभा से मंत्रिपरिषद के सदस्यों का परिचय कराना चाहता हूँ।

श्री प्रणब मुखर्जी	रक्षा मंत्री
श्री अर्जुन सिंह	मानव संसाधन विकास मंत्री
श्री शरद पवार	कृषि मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री
श्री लालू प्रसाद	रेल मंत्री
श्री शिवराज वि. पाटील	गृह मंत्री
श्री रामविलास पासवान	रसायन और उर्वरक मंत्री तथा इस्पात मंत्री
श्री गुलाम नबी आजाद	संसदीय कार्य मंत्री तथा शहरी विकास मंत्री
श्री एस. जयपाल रेड्डी	सूचना और प्रसारण मंत्री तथा सांस्कृतिक मंत्री
श्री शीश राम ओला	श्रम और रोजगार मंत्री
श्री पी. चिदम्बरम	वित्त मंत्री
श्री महावीर प्रसाद	लघु उद्योग मंत्री तथा कृषि और ग्रामीण उद्योग मंत्री
श्री पी. आर. किन्डिया	जनजातीय कार्य मंत्री तथा उत्तर–पूर्व क्षेत्र विकास मंत्री

श्री टी. आर. बालू	सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री तथा पोत परिवहन मंत्री
श्री शंकर सिंह वाघेला	वस्त्र मंत्री
श्री कमल नाथ	वाणिज्य और उद्योग मंत्री
श्री पी. एम. सईद	विद्युत मंत्री
डा. रघुवंश प्रसाद सिंह	ग्रामीण विकास मंत्री
श्री प्रियरंजन दासमुंशी	जल संसाधन मंत्री
श्री मणिशंकर अय्यर	पैट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री तथा पंचायती राज मंत्री
श्री सुनील दत्त	युवक कार्यक्रम और खेल मंत्री
श्रीमती मीरा कुमार	सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री
श्री के. चन्द्रशेखर राव	निर्विभाग मत्री
श्री शिबु सोरेन	कोयला और खान मंत्री
श्री ए. राजा	पर्यावरण और वन मंत्री
श्री दयानिधि मारन	संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री
डा. अन्बूमणि रामदास	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

श्री संतोष मोहन देव	भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री जगदीश टाइटलर	अप्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री ऑस्कर फर्नांडिस	सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्रीमती रेनुका चौधरी	पर्यटन मंत्रालय की राज्य मंत्री
श्री सुबोध कांत सहाय	खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री कपिल सिब्बल	विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के राज्य मंत्री तथा महासागर विकास विभाग के राज्य मंत्री
श्री विलास मुत्तेमवार	अपारम्परिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय के राज्य मंत्री
कुमारी शैलजा	शहरी रोजगार और गरीबी उपशमन मंत्रालय की राज्य मंत्री
श्री प्रफुल्ल पटेल	नागर विमानन मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री प्रेमचन्द गुप्ता	कंपनी कार्य मंत्रालय के राज्य मंत्री

...(व्यवधान)

राज्य मंत्री

श्री ई. अहमद	विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री सुरेश पचौरी	कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री बी. के. हान्डिक	रक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती पनबाक लक्ष्मी	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री
डा. दसारी नारायण राव	कोयला और खान मंत्रालय में राज्य मंत्री
डा. शकील अहमद	संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री
राव इन्द्रजीत सिंह	विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री नारनभाई रठवा	रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री के. रहमान खान	रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री के. एच. मुनियप्पा	सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री एम. वी. राजशेखरन	योजना मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री कांतिलाल भूरिया	कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री माणिक राव होडल्या गावित	गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री श्रीप्रकाश जायसवाल	गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री पृथ्वीराज चव्हाण	प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री
श्री तस्लीमुद्दीन	कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री

श्रीमती सूर्यकांता पाटील	ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री मो. अली अशरफ़ फातमी	मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री ए. नरेन्द्र	ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री आर. वेलु	रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री एस. एस. पलानीमनिक्कम	वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री एस. रघुपति	गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री के. वेंकटपति	विधि और न्याय मंत्रालय में राज्य मंत्री।
श्रीमती सुब्बुलक्ष्मी जगदीशन	सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री ई.वी.के.एस. इलेंगोवन	वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती कान्ति सिंह	मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री नमोनारायण मीणा	पर्यावरण और वन मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री जय प्रकाश नारायण यादव	जल संसाधन मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री अखिलेश सिंह	कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री

अध्यक्ष महोदय : अब सभा सोमवार को राष्ट्रपति के अभिभाषण के आधे घंटे पश्चात् पुनः समवेत होने के लिए स्थगित होती है।

अपराह्न 1.59 बजे

तत्पश्चात् लोकसभा सोमवार, 7 जून, 2004/17 ज्येष्ठ, 1926 (शक) को राष्ट्रपति के अभिभाषण के आधे घंटे पश्चात् तक के लिए स्थगित हुई।

© 2004 प्रतिलिप्यधिकार लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों (ग्यारहवां संस्करण) के नियम 379 और 382 के अंतर्गत प्रकाशित और सनलाईट प्रिन्टर्स, दिल्ली – 110006 द्वारा मुद्रित।